कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2023-25 RNI No.-CHHHIN/2002/10910, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन - सोमवार 24 नवम्बर 2025 वर्ष-24 अंक - 12 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 12 www.krishakjagat.org पृष्ठ -1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

अंदर पढ़िये...

5

रबी फसल - कुसुम लगायें

6

रबी प्याज की उन्नत खेती

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 21वीं किस्त के रूप में

छत्तीसगढ़ के 25 लाख किसानों को मिले 500 करोड़ रूपये

मखाना बोर्ड का लाभ छत्तीसगढ़ के किसानों को भी मिलेगा : श्री शिवराज सिंह

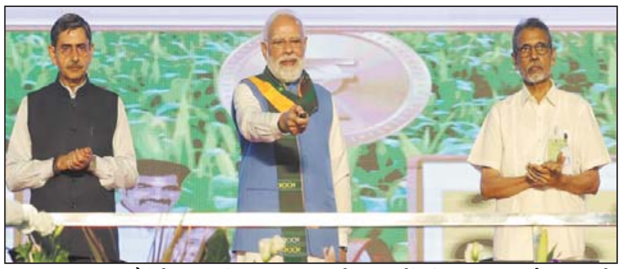

रायपुर। केंद्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने धमतरी में आयोजित राज्यस्तरीय समारोह में 2,225 करोड़ रुपये की ग्रामीण सड़क परियोजनाओं, मखाना बोर्ड का विस्तार, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के अंतर्गत किसानों को प्रत्यक्ष भुगतान और अनेक विकासपरक घोषणाओं का औपचारिक शुभारंभ किया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा कोयंबटूर से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 21वीं किस्त का देशव्यापी वितरण और छत्तीसगढ़ के 25 लाख किसानों के खातों में 500 करोड़ रुपये का सीधा हस्तांतरण इस आयोजन का मुख्य आकर्षण रहा। हज़ारों किसानों और ग्रामीण प्रतिनिधियों की उपस्थिति में सम्पन्न इस समारोह ने राज्य के विकास पथ को नई दिशा प्रदान की।

इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के धमतरी में राज्यस्तरीय समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें केंद्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास मंत्री सर्वश्री शिवराज सिंह, छग के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू, उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, राज्य के कृषि मंत्री रामविचार नेताम, मंत्री दयालदास बघेल सहित अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित थे। **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के अंतर्गत 2,225 करोड़ रुपये की स्वीकृत ग्रामीण सड़क परियोजनाओं का दस्तावेज प्रस्तुत किया। इन परियोजनाओं के माध्यम से छत्तीसगढ़ के लगभग 780 गाँव पहली बार पक्की सड़क से जुड़ेंगे और 2,500 किलोमीटर से अधिक नई ग्रामीण सड़कें निर्मित की जाएँगी।

राज्य में अब तक 23 लाख क्विंटल से अधिक धान खरीदी हुई

रायपुर। राज्य में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी का सिलसिला जोर पकड़ने लगा है। राज्य में 15 नवंबर से लेकर 20 नवंबर तक कुल 23,66,958 क्विंटल धान की खरीदी समर्थन मूल्य पर की जा चुकी है।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के निर्देशानुसार धान खरीदी के साथ-साथ किसानों को समर्थन मूल्य का भुगतान भी शुरू कर दिया गया है। इसके लिए मार्कफेड द्वारा अपेक्स बैंक को 214.18 करोड़ रूपए जारी कर दिए गए हैं। यहां यह बता दें कि राज्य के किसानों से क्रय किए गए धान के मूल्य भुगतान के लिए छत्तीसगढ़ सरकार ने मार्कफेड को 26,200 करोड़ रूपए की बैंक गांरटी पहले से दे रखी है। धान खरीदी की व्यवस्था पर निगरानी के लिए सभी केन्द्रों में अधिकारी तैनात किए गए हैं। राज्य स्तर के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों और जिला स्तर के अधिकारी लगातार दौरा कर धान खरीदी एवं केन्द्रों की व्यवस्था का जायजा ले रहे हैं।

राज्य में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी में किसी भी तरह की गड़बड़ी न होने पाए इसको लेकर भी कड़ी निगरानी रखी जा रही है। बाहर से धान की आवक की रोकथाम के लिए चेकपोस्ट पर अधिकारी तैनात किए गए हैं। जगह-जगह मॉलवाहकों की औचक जांच भी की जा रही है। किसानों का कहना है कि धान खरीदी के लिए राज्य सरकार द्वारा शुरू की गई टोकन तुंहर एप्प की ऑनलाईन व्यवस्था से टोकन प्राप्त करने और धान बेचने में आसान हो रही है। यहां यह उल्लेखनीय है कि खरीफ विपणन सीजन 2025-26 में समर्थन मूल्य पर धान बेचने के लिए राज्य के 26.50 लाख किसानों ने पंजीयन कराया है। पंजीकृत धान का रकबा 29.27 लाख हेक्टेयर है।

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला - सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।

(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेव्हर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज

जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास २
साईज - १६, २० मिमी

जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
१३, १५ मील (०.३३, ०.३८ मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटींग में उपलब्ध

जैन ड्रिप® प्रति बूँद, फसल भरपूर!®

जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि. छोटे छोटे कदम. आसमान छूने का दम!®

दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

ड्रिपलाईन व फिटींग्ज | ड्रिपर्स | रेनपोर्ट स्प्रिंकलर | स्प्रे हेड व जेटस् | वॉल्व | फिल्टर्स | फिल्ट्रेशन संसाधन | फर्टिगेशन संसाधन | पीव्हीसी पाईप व फिटींग्ज | एचडीपीई पाईप्स व फिटींग्ज | क्विक कनेक्ट पाइप | ऑटोमेशन व कन्ट्रोलर्स

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!

खेती की अधिक जानकारी के लिए देखें
www.krishakjagat.org

संतरे की उत्पादकता बढ़ाने 70 करोड़ का सेंटर बनेगा : श्री चौहान

नागपुर में एग्रो विजन 2025 का शुभारंभ

नागपुर (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने नागपुर में एग्रो विज़न 2025 का भव्य शुभारंभ किया। समारोह में कृषि मंत्री श्री चौहान ने संतरा उत्पादकता बढ़ाने के लिए नागपुर में 70 करोड़ रुपये से क्लीन प्लांट सेंटर स्थापित करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि कमजोर या वायरस-ग्रस्त पौधे किसान की वर्षों की मेहनत नष्ट कर देते हैं, इसलिए चयनित नर्सरियों को 4 करोड़ रुपये तक तथा मध्यम/छोटी नर्सरियों को 2 करोड़ रुपये तक आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

महिला सशक्तिकरण पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि 'आज सरकारें बहना बना रही हैं-लाड़की बहना, लाड़ली बहना, जीविका बहना—उनकी शक्ति को कोई अनदेखा नहीं कर सकता।' उन्होंने कहा कि एग्रो विज़न महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने की दिशा में नई राह खोल रहा है।

किसानों की समस्याओं पर चर्चा करते हुए श्री चौहान ने बताया कि अब जलभराव और जंगली जानवरों द्वारा फसल क्षति को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में शामिल कर लिया गया है। इससे किसानों को प्राकृतिक व आकस्मिक क्षति में भी राहत मिलेगी। साथ ही आलू, प्याज, टमाटर जैसी उपज को बड़े शहरों तक भेजने का पूरा परिवहन खर्च अब केंद्र सरकार उठाएगी, जिससे किसानों को बेहतर दाम मिल सकें।

कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय मंत्री श्री चौहान और श्री गडकरी ने राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के 65 करोड़ रुपये के नए प्लांट का शिलान्यास भी किया, जो 2027 से नागपुर में शुरू होगा।

एग्रो विज़न में आधुनिक कृषि तकनीकों, उन्नत उपकरणों, फसल प्रबंधन समाधानों और नवाचारों की भव्य प्रदर्शनी लगाई गई। विशेषज्ञों ने जल संरक्षण, फसल विविधीकरण और आधुनिक कृषि विपणन पर अपने विचार साझा किए।

कार्यक्रम में महाराष्ट्र सरकार के मंत्री, जनप्रतिनिधि, कृषि वैज्ञानिक, कुलपति, शोध संस्थान प्रतिनिधि, उद्यमी और बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे।

कृषक जगत स्टॉल बना आकर्षण का केन्द्र

नागपुर एग्रो विजन में कृषक जगत के स्टॉल पर सिवनी उपसंचालक कृषि श्री एस. के. धुर्वे तथा सहायक संचालक श्री प्रफुल्ल घोड़ेश्वर (बायें), उप परियोजना संचालक आत्मा छिंदवाड़ा श्रीमती प्राची कौतू एवं सहायक संचालक कृषि श्री दीपक चौरसिया (दायें) ने भी भ्रमण कर नवीनतम तकनीकों की जानकारी ली।

श्री नीतीश कुमार ने बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली

पटना। गांधी मैदान पटना में श्री नीतीश कुमार ने रिकॉर्ड 10वीं बार बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। उन्हें यह शपथ राज्यपाल ने दिलाई। उनके बाद उप मुख्यमंत्री के रूप में सम्राट चौधरी और विजय सिन्हा ने भी पद एवं गोपनीयता की शपथ ग्रहण की। इसके साथ ही एनडीए गठबंधन की नई सरकार ने औपचारिक रूप से कामकाज की शुरुआत कर दी। समारोह में कुल 26 मंत्रियों ने शपथ ली।

छत्तीसगढ़ प्रवास के दौरान धमतरी जिले में केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय, उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा सहित अन्य जनप्रतिनिधियों और हजारों ग्रामीण महिलाओं की उपस्थिति में बहुप्रतीक्षित एकीकृत राज्य ब्राण्ड छत्तीसकला तथा डिजिटल फाइनेंस बुकलेट का विमोचन किया।

देश में खाद्यान्न उत्पादन 357 मिलियन टन से अधिक होने की संभावना

वर्ष 2024-25 का अंतिम उत्पादन अनुमान जारी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने नई दिल्ली में वर्ष 2024-25 के फसल उत्पादन के अंतिम अनुमान जारी करते हुए रिकॉर्ड स्तर पर खाद्यान्न उत्पादन के लिए देश के किसानों का आभार व्यक्त किया। साथ ही दलहन-तिलहन में भी आशाजनक वृद्धि के लिए प्रसन्नता व्यक्त की। श्री चौहान ने बताया कि देश के खाद्यान्न उत्पादन में पिछले 10 वर्षों में अब-तक की सबसे बड़ी वृद्धि देखी जा रही है। वर्ष 2015-16 में जहां उत्पादन 251.54 मिलियन टन था वो अब 106 मिलियन टन बढ़कर 357.73 मिलियन टन हो गया है।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने बताया कि चावल उत्पादन भी रिकॉर्ड स्तर पर बढ़कर 1501.84 लाख टन हो गया है। यह पिछले वर्ष के 1378.25 लाख टन चावल उत्पादन से 123.59 लाख टन अधिक है। वही गेहूं में भी रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की गई है। गेहूं उत्पादन बढ़कर 1179.45 लाख टन हो गया है, जो पिछले वर्ष के 1132.92 लाख टन से 46.53 लाख टन अधिक है। मूंग उत्पादन बढ़कर 42.44

लाख टन, सोयाबीन उत्पादन 152.68 लाख टन, मूंगफली उत्पादन 119.42 लाख टन की रिकॉर्ड वृद्धि हुई है। मक्का और श्री अन्न का उत्पादन 434.09 लाख टन और 185.92 लाख टन अनुमानित है, जो पिछले वर्ष क्रमशः 376.65 लाख टन और 175.72 लाख टन था।

केंद्रीय मंत्री ने दलहन-तिलहन के उत्पादन में भी आशाजनक वृद्धि पर प्रसन्नता जताई और बताया कि वर्ष 2024-25 के दौरान कुल तिलहन का उत्पादन रिकॉर्ड 429.89 लाख टन अनुमानित है, जो वर्ष 2023-24 के 396.69 लाख टन उत्पादन से

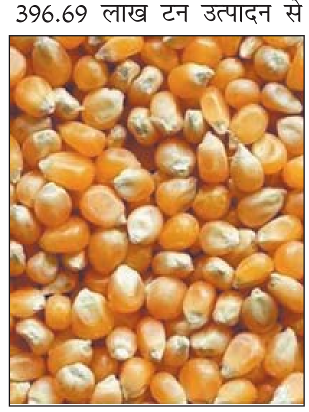

33.20 लाख टन अधिक है। तिलहन उत्पादन में रिकॉर्ड वृद्धि देखी गई क्योंकि मूंगफली और सोयाबीन का अनुमानित उत्पादन क्रमशः 119.42 लाख टन और 152.68 लाख टन रहा, जो पिछले वर्ष के क्रमशः 101.80 लाख टन और 130.62 लाख टन की तुलना में क्रमशः 17.62 लाख टन और 22.06 लाख टन अधिक है। रेपसीड और सरसों का उत्पादन 126.67 लाख टन अनुमानित है।

कुल खाद्यान्न	**- 3577.32 लाख टन (रिकॉर्ड)**
● चावल	- 1501.84 लाख टन (रिकॉर्ड)
● गेहूँ	- 1179.45 लाख टन (रिकॉर्ड)
● मोटे अनाज	- 639.21 लाख टन
● मक्का	- 434.09 लाख टन
कुल दलहन	**- 256.83 लाख टन**
● श्री अन्न	- 185.92 लाख टन
● चना	- 111.14 लाख टन
● मूंग	- 42.44 लाख टन
● तूर	- 36.24 लाख टन
कुल तिलहन	**- 429.89 लाख टन**
● सोयाबीन	- 152.68 लाख टन (रिकॉर्ड)
● मूंगफली	- 119.42 लाख टन (रिकॉर्ड)
● रेपसीड एवं सरसों	- 126.67 लाख टन
गन्ना -	**4546.11 लाख टन**
कपास -	**297.24 लाख गांठें (प्रति 170 कि. ग्रा.)**
पटसन एवं मेस्ता	**- 88.02 लाख गांठें (प्रति 180 कि. ग्रा.)**

जनजातीय समुदायों का भारत के इतिहास में गौरवशाली योगदान : श्रीमती मुर्मू

रायपुर। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर, सरगुजा में आयोजित 'जनजातीय गौरव दिवस' समारोह में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। इस अवसर पर बोलते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि जनजातीय समुदायों का योगदान भारत के इतिहास में एक गौरवशाली अध्याय है, जो लोकतंत्र की जननी है। इसके उदाहरण प्राचीन गणराज्यों के साथ-साथ कई जनजातीय परंपराओं में भी देखे जा सकते हैं, जैसे कि बस्तर में 'मुरिया दरबार' जो आदिम लोगों की संसद है।

राष्ट्रपति ने कहा कि जनजातीय विरासत की जड़ें छत्तीसगढ़, ओडिशा और झारखंड सहित देश के विभिन्न हिस्सों में गहरी हैं। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि इस वर्ष छत्तीसगढ़ सरकार ने 1 नवंबर से 15 नवंबर तक जनजातीय गौरव पखवाड़े को बड़े स्तर पर मनाया।

राष्ट्रपति ने रेखांकित किया कि पिछले एक दशक में, जनजातीय समुदायों के विकास और कल्याण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर योजनाएँ विकसित और कार्यान्वित की गई हैं। पिछले वर्ष, गांधी जयंती के अवसर पर 'धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान' शुरू किया गया था। इस अभियान का लाभ देश भर के 5 करोड़ से अधिक जनजातीय भाई-बहनों तक पहुँचेगा। वर्ष 2023 में, 75 विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान (पीएम-जनमन अभियान) शुरू किया गया। ये सभी योजनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि सरकार जनजातीय समुदायों को कितनी प्राथमिकता देती है।

राष्ट्रपति ने कहा कि जनजातीय समुदायों के विकास प्रयासों को नई ऊर्जा देने के लिए, भारत सरकार ने भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के वर्ष के दौरान 'आदि कर्मयोगी अभियान' शुरू किया है। उन्होंने उल्लेख किया कि इस अभियान के तहत देश भर में लगभग 20 लाख स्वयंसेवकों का एक नेटवर्क तैयार किया जा रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि ये स्वयंसेवक जमीनी स्तर पर काम करके जनजातीय समुदायों का विकास सुनिश्चित करेंगे। राष्ट्रपति ने यह जानकर प्रसन्नता व्यक्त की कि छत्तीसगढ़ सहित देश भर में लोग वामपंथी उग्रवाद का रास्ता छोड़कर विकास की मुख्यधारा में शामिल हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य सरकारों के सुविचारित और सुसंगठित प्रयासों से निकट भविष्य में वामपंथी उग्रवाद का उन्मूलन संभव हो पाएगा। उन्होंने इस बात पर खुशी व्यक्त की कि हाल ही में आयोजित 'बस्तर ओलंपिक्स' में 1,65,000 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि जनजातीय महापुरुषों के आदर्शों का पालन करते हुए, छत्तीसगढ़ के लोग एक सशक्त, आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण में अमूल्य योगदान देंगे।

छत्तीसगढ़ को जल संरक्षण के क्षेत्र में मिला राष्ट्रीय सम्मान

राष्ट्रपति ने नई दिल्ली में राज्य के 12 जिलों को किया सम्मानित

जल संरक्षण एवं सामुदायिक भागीदारी के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां अर्जित कर छत्तीसगढ़ के 12 जिलों रायपुर, गरियाबंद, महासमुंद, राजनांदगांव, बलौदाबाजार-भाटापारा, धमतरी, बालोद, बलरामपुर, बिलासपुर, रायगढ़, दुर्ग और सूरजपुर ने राष्ट्रीय स्तर पर नया इतिहास रच दिया है। विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित 6वें राष्ट्रीय जल पुरस्कार एवं जल संचय जनभागीदारी 1.0 अवॉर्ड समारोह में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने इन जिलों को सम्मानित किया है।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व और संवेदनशील प्रशासनिक प्रयासों के परिणामस्वरूप छत्तीसगढ़ ने जल संरक्षण की दिशा में देशभर में विशेष पहचान बनाई है। पिछले दो वर्षों में राज्य सरकार के अभिनव प्रयासों और जनभागीदारी ने जल संचयन की दिशा में नए आयाम हासिल किए हैं। मुख्यमंत्री ने इन जिलों के नागरिकों और जिला प्रशासन को अपनी शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा कि जल संचयन के प्रति लोगों में आई यह चेतना जल के समुचित उपयोग को बढ़ावा देगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश का जल भविष्य सुरक्षित करने में यह पुरस्कार प्रेरणादायी होगा।

सम्मानित जिले : रायपुर, राजनांदगांव, बालोद, महासमुंद, बलौदा बाजार- भाटापारा, गरियाबंद, बिलासपुर, दुर्ग, बलरामपुर, धमतरी, रायगढ़ एवं सूरजपुर।

200 यूनिट तक मिलेगा हाफ बिजली का लाभ : मुख्यमंत्री

प्रदेश के 42 लाख उपभोक्ता होंगे लाभान्वित

रायपुर। राज्य के विद्युत उपभोक्ताओं को बड़ी राहत देते हुए मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने विधानसभा के विशेष सत्र में नई बिजली योजना की घोषणा की। अब प्रदेश के ऐसे घरेलू उपभोक्ताओं को जिनका 200 यूनिट तक विद्युत खपत है उन्हें 200 यूनिट तक हाफ बिजली का पूरा लाभ प्राप्त होगा। इस निर्णय से राज्य के 36 लाख घरेलू उपभोक्ता सीधे तौर पर लाभान्वित होंगे। 200 से 400 यूनिट तक बिजली खपत करने वाले उपभोक्ताओं को भी अगले 1 वर्ष तक 200 यूनिट तक हॉफ बिजली बिल का लाभ मिलेगा, इससे 6 लाख उपभोक्ता लाभान्वित होंगे। इन उपभोक्ताओं को 1 वर्ष तक की छूट दी गई है ताकि इस अवधि में वे अपने घरों में पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के तहत सोलर प्लांट स्थापित करा सकें। इस तरह 200 यूनिट तक हॉफ बिजली बिल योजना से प्रदेश के 45 लाख उपभोक्ताओं में से 42 लाख उपभोक्ता लाभान्वित होंगे, वहीं प्रधानमंत्री सूर्य घर मुक्त बिजली योजना का लाभ प्रदेश के सभी उपभोक्ताओं को मिलेगा।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता हर उपभोक्ता को सस्ती, सुचारू और भरोसेमंद विद्युत आपूर्ति उपलब्ध कराना है। सोलर प्लांट स्थापना प्रक्रिया में समय लगने के कारण घरेलू उपभोक्ताओं के लिए 1 दिसंबर से नई योजना लागू की जा रही है, जिससे आम जनता के बिजली बिल में महत्वपूर्ण कमी आएगी।

मुख्यमंत्री श्री साय ने यह भी बताया कि पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के अंतर्गत राज्य शासन की ओर से सब्सिडी दी जा रही है। जिसके तहत 1 किलोवॉट क्षमता के सोलर प्लांट पर 15,000 रुपये तथा 2 किलोवॉट या उससे अधिक क्षमता के प्लांट पर 30,000 रुपये की अतिरिक्त सब्सिडी दी जा रही है। यह व्यवस्था राज्य में सौर ऊर्जा अपनाने को प्रोत्साहित करेगी और आने वाले समय में उपभोक्ताओं को हाफ बिजली से फ्री बिजली की ओर ले जाएगी। मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि यह निर्णय न केवल जनता के बिजली बिल को कम करेगा बल्कि राज्य को ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक मजबूत कदम साबित होगा।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने घोषणा की कि केंद्र सरकार द्वारा स्थापित किए गए राष्ट्रीय मखाना विकास बोर्ड में अब छत्तीसगढ़ को भी शामिल किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस निर्णय से प्रदेश के किसानों को मखाना उत्पादन, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और राष्ट्रीय बाज़ार से जुड़ने का बड़ा अवसर प्राप्त होगा।

कार्यक्रम स्थल पर कृषि तकनीक, ग्रामीण अवसंरचना, महिला स्व-सहायता समूहों, प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना और आत्मनिर्भर भारत से संबंधित प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसे किसानों और ग्रामीण प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक देखा।

राज्य स्तरीय समारोह को संबोधित करते समय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने किसानों की आय-वृद्धि, कृषि तकनीकी विस्तार, सिंचाई क्षमता, जैविक खेती और मिलेट मिशन जैसे विषयों पर केंद्रित महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि अन्नदाताओं का सम्मान और समृद्धि हमारी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ में धान खरीदी को अधिक मजबूत और किसान-हितैषी बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार 3,100 रुपये प्रति क्विंटल की दर से धान की खरीदी कर रही है तथा किसानों को 21 क्विंटल प्रति एकड़ तक बेचने की अनुमति दी गई है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ जैविक खेती की अपार संभावनाओं वाला प्रदेश है, क्योंकि जनजातीय क्षेत्रों में रासायनिक खादों का न्यूनतम उपयोग हुआ है। मुख्यमंत्री ने कहा कि 2015 से लंबित 115 सिंचाई परियोजनाओं के लिए 2,800 करोड़ रुपये की मंजूरी दी गई है, जिससे लाखों किसानों को सिंचाई सुविधा मिलेगी उन्होंने कहा कि वस्तु एवं सेवा कर (GST) में कटौती से ट्रैक्टरों और कृषि मशीनरी की खरीदी बढ़ी है। उन्होंने कहा कि ''कई व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल यह बताते हैं कि GST कटौती के बाद किसानों की खरीद क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।''

कार्यक्रम का समापन किसानों के प्रति आभार और छत्तीसगढ़ के ग्रामीण एवं कृषि विकास की निरंतरता बनाए रखने के संकल्प के साथ हुआ।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्द्रिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं कृषक जगत, 14 इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत

संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

सबसे उत्तम विजय प्रेम की है, जो सदैव के लिए विजेताओं का हृदय बांध लेती है। - सम्राट अशोक

रबी बुआई उपरांत फसलों की देखरेख

रबी फसलों की बुआई कार्यक्रम में पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष गति कुछ कम दिखाई दे रही है, जिसका परिणाम बुआई में देरी हो सकती है। जबकि समय से फसलों की बुआई का अपना अलग महत्व है। कहावत है डाल का चूका बंदर और समय से चूका किसान दोनों की दुर्गति होती है। भूमि में नमी की बढ़ोत्तरी से अंकुरण में इजाफा होगा। अब गेहूं की बुआई पूरी कर लेनी चाहिये ताकि अच्छी नमी का पूरा-पूरा लाभ अर्जित किया जा सके। ध्यान रखें, केवल उन्हीं किस्मों की बुआई की जाये जो असिंचित या अर्धसिंचित अवस्था के लिये बताई गई हैं। असिंचित अवस्था में यदि सिंचित अवस्था की जातियों की बुआई की गई हो तो भविष्य में पौधों में बालियां समय से पहले निकल आयेंगी और दाना कमजोर होगा पूर्व में ऐसे अनेकों उदाहरण सामने आये हैं और बाद में निराकरण नहीं हो पाये हैं। असिंचित अवस्था की गेहूं की जातियों की बुआई कम से कम 4-6 सेमी गहराई पर की जाना चाहिये। तथा दाना आल (नमी) में जा रहा है इस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये किसी भी कीमत में बीज के साथ उर्वरक मिश्रण नहीं किया जाये तथा इस वर्ष अधिक से अधिक क्षेत्र में संतुलित उर्वरक उपयोग अवश्य किया जाये चूंकि भूमि में आम वर्षों की तुलना में इस वर्ष नमी पर्याप्त है। जिसका लाभ लेने से अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। बीजोपचार अनिवार्य होना चाहिये तथा अंकुरण उपरांत खाली जगह भरने से लक्षित उत्पादन मिलना संभव होगा। उल्लेखनीय है कि देश में तथा प्रदेश में 60-70 प्रतिशत खेती वर्षा आधारित होती है। यदि क्षेत्र की औसत उत्पादकता बढ़ा दी जाये तो पूरे क्षेत्र की औसत

में फर्क लाया जा सकता है। अलसी का बीज चिकना होता है उसकी उराई अनुभवी मजदूरों से ही कराई जाये। अन्यथा जगह-जगह पौधों के झुक्के मिलेंगे, जिनसे औसत पौध संख्या प्रभावित होगी चना, मटर, मसूर, कुसुम की बुआई भी उचित गहराई पर की जाये तथा विधिवत बीजोपचार भी किया जाये। चने के खेतों से सोयाबीन के स्वयं ऊगे पौधों को निकालना जरूरी है ताकि चने की इल्ली चौड़ी पत्तियों का सुख देखकर अपने अंडों के लिये अड्डा बनाने में विफल हो सकें। साथ ही जगह-जगह टी आकार की खूटियां भी, खरपतवार जो कोमल पौधों के साथ तीव्रता से ऊग कर पोषक तत्वों का बंटवारा करते हैं उनको निकालकर खाद के गड्ढों में डालते रहें। ध्यान रहे सभी फसलों में पर्याप्त पौध संख्या हो ताकि अच्छा उत्पादन मिल सके। सिंचित अवस्था में अब गेहूं की बुआई 2-3 सेमी गहराई पर करें। पूर्ण संतुलित उर्वरक की मात्रा देकर ही करें तथा खरपतवारों को मारने के लिये 30 दिनों के भीतर ही खरपतवारनाशी का उपयोग करें अन्यथा पैसा एवं श्रम दोनों व्यर्थ जायेंगे। पहली सिंचाई किरीट जड़ अवस्था पर बहुत जरूरी है जो कल्लों का औसत बढ़ाती है इस अवस्था में नमी की कमी कदापि नहीं होना चाहिये अतएव 21 दिनों बाद सिंचाई सुनिश्चित करें। वो भी खरपतवार निकालने के बाद पहली निंदाई यदि हाथों से की जाये तो अधिक अच्छा होगा। उर्वरक की टाप ड्रेसिंग खरपतवार को निकालने के बाद और सिंचाई के बाद ही की जाये ताकि उसका पूर्ण लाभ मिल सके। यह बात यूरिया उर्वरक के उपयोग के बारे में जरूरी है। जो आमतौर पर कृषक करते हैं। बुआई उपरांत की इन छोटी-मोटी तकनीकी का अंगीकरण आर्थिक दृष्टि से बहुत उपयोगी और महत्वपूर्ण भी हैं।

सनातन जीवन-दर्शन : प्रकृति और संस्कृति से जुड़ी जीवन पद्धति

● राजेन्द्र सिंह

पंच महाभूतों के योग की प्रकृति ने ही इस सृष्टि को बनाया है। इन पंचमहाभूतों से निर्मित सृष्टि को चलाने वाले का नाम ही भगवान है। भगवान शब्द पंच महाभूतों के प्रथम वर्ण के योग (भ- भूमि, ग- गगन, व- वायु, अ- अग्नि, न- नीर) से बना है। भारतीय जीवन पद्धति में इन्हीं पंचमहाभूतों की पूजा होती रही है। इन्हीं के योग को भगवान माना गया है। इन्हीं भगवान से हमारी जीवन पद्धति के निर्धारण में जीवन जीने की विद्या, व्यवहार, संस्कार व जीवन को चलने वाले योग, जीवन को बनाने वाले पदार्थ, द्रव्य, गैस के योग से प्रकृति और संस्कृति की समृद्धि होती है। इनसे जीवन पद्धति में किसी भी तरह का विस्थापन, बिगाड़ और विनाश नहीं होता; इसे ही सनातन माना जाता है। सनातन का अर्थ होता है- सदैव, नित्य, नूतन निर्माण की प्रक्रिया। सनातन में विश्वास रखने वाले लोग तत्व रूप में कभी मरते नहीं हैं, उनकी आत्मा पुनर्जन्म लेती रहती है। इसलिए पुनर्जन्म में विश्वास रखने वाली उन सभी आत्माओं का मानना है कि यह सृष्टि सदैव चलती रहेगी, इसका कभी आदि या अंत नहीं होगा। यह चरैवेति-चरैवेति आदि-अन्त भारतीय शास्त्रोक्त कथन है। यही कथन भारतीय ज्ञानतंत्र को सदैव समृद्ध करता रहता है।

पंचमहाभूत और 'भगवान' की संकल्पना

यह समृद्धि हमारी प्रकृति में निर्मित संस्कृति के योग से बनी है। इसीलिए जब प्रकृति और संस्कृति का योग ठीक रहता है, तब आर्थिकी और परिस्थितिकी दोनों ही समान रूप से समृद्ध होती रहती हैं। जब तक भारत में प्रकृति और संस्कृति के योग से चलने वाली जीवन पद्धति रही, तब तक भारत दुनिया की 32 प्रतिशत जीडीपी वाला देश था; जब से उस संस्कृति और प्रकृति में दूरियां बढ़त गईं, तब से हमारी आर्थिकी और पारिस्थितिकी दोनों में गिरावट आई है।

प्रकृति-संस्कृति का योग: भारत की मूल जीवन-पद्धति

हमें यदि भारत की सनातनता को समृद्ध करने वाला रास्ता पकड़ना है, तो हमें प्रकृति और संस्कृति के साथ जीवन को आनंदमय बनाते हुए, मोक्ष की तरफ जाना है। यह रास्ता धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों कदमों पर आगे जाता है; तभी तो भारत जीवन विद्या के सभी आयामों से चार कदम आगे है। इन चार कदमों को हम बार-बार स्मरण करके, अपनी संस्कृति को समृद्ध

बनाने का रास्ता पकड़ सकते हैं। हमारे चार आश्रमों, चार अवस्थाओं तथा जीवन को समृद्ध बनाकर पूर्ण आनंद के रास्ते को ही भारतीय ज्ञानतंत्र में धर्म कहा गया है। इसी के माध्यम से काम करके हम आनंदपूर्वक जीवन को चलाने के लिए जो भी अर्थ, पदार्थ आदि कुछ भी चाहिए, उसे प्राप्त करके, मोक्ष के रास्ते पर प्रस्थान कर सकते हैं। मोक्ष हेतु हम जीवन को आनंदपूर्वक शुरू करके, अंत तक इस शरीर को नीरोग, आरोग्य रखने के लिए ऐसा ही आचार-विचार, आहार-विहार करें, जिसमें आनंद हो। यह हमें प्रकृति और संस्कृति के योग से ही प्राप्त हो सकता है।

सनातन समृद्धि और भू-सांस्कृतिक मानचित्र का महत्व

प्रकृति में विश्वास, आस्था, श्रद्धा और इष्ट-भाव, यही भारत के लोगों में था; इसीलिए भारतीय लोग दुनिया की आर्थिकी और पारिस्थितिकी में समृद्ध थे। ये हमारी सनातन जीवन पद्धति के नए शब्द है। चूँकि आज हमारी शिक्षा में इन्हीं शब्दों का प्रयोग होता है, इसलिए मैं इन दोनों शब्दों का ही प्रयोग कर रहा हूं; लेकिन भारतीय ज्ञानतंत्र में इनके पर्याय जीवन में समृद्धि, आनंद, संतोष और समाधान शब्द हैं। संतोष और समाधान हमें तभी होता है, जब हमारी आर्थिकी और पारिस्थितिकी दोनों हमारे जीवन को मोक्ष के रास्ते पर जाने में सहायक होती हैं। ये जीवन में मोक्ष प्राप्ति के अवरोधों से हमें बचा लेती हैं।

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष: जीवन विद्या के चार आधार

प्रकृति व संस्कृति के योग के आधार से ही भारत आरोग्य प्राप्त करता था। आरोग्य के कारण ही हम दुनिया को सिखाने वाले माने जाते थे। दुनिया हमारे इसी आरोग्य के जीवन व्यवहार और संस्कार का सम्मान करती थी। जैसे-जैसे हमारा जीवन इस प्रकृति से कटता गया, वैसे-वैसे हमारी संस्कृति में गिरावट आती गई। फिर हम सिखाने लायक नहीं बचे, बल्कि हम सीखने वाले बन गए। तब से हम शिक्षा द्वारा दुनिया से आधुनिक चिकित्सा पद्धति, सीखने लगे।

हमारी खेती, पशुपालन, उद्योग, जीवन जीने की कला आदि सब कुछ

भारतीय जीवन-दर्शन का मूल प्रकृति और संस्कृति के उस सनातन योग में निहित है, जिसने पंचमहाभूतों से सृष्टि की रचना की और मानव जीवन को आचार-विचार, आरोग्य, संतुलन व समृद्धि का मार्ग दिया। जैसे-जैसे यह योग टूटता गया, आर्थिकी, पारिस्थितिकी और जीवन-मूल्य क्षीण होते गए। पुनः समृद्धि का मार्ग इसी प्रकृति-संस्कृति संतुलन की वापसी में है।

हमारे जीवन के लिए जरूरी है। अपने प्रचीन ज्ञान-तंत्र से हमें जल, नदियों व समुद्र के प्रबंधन का कौशल पुनः प्राप्त होगा। जब हम अपने ज्ञान तंत्र से इसे प्राप्त कर लेंगे, तो हमारा व्यवहार हमारे संस्कार का केवल हिस्सा ही नहीं बनेगा, बल्कि वह हमारे रक्त प्रवाह में शामिल हो जाएगा। वही रक्त-प्रवाह हमें आरोग्य की तरफ लेकर जाएगा।

समकालीन संकट: प्रकृति से दूर जाती संस्कृति

आज हम सभी तरह से बीमार हैं। यह बीमारी तथा हमारे जीवन में हमारा अर्थ, धर्म और इसका लालच हमें आनंद के मार्ग व मोक्ष के द्वार से दूर करता है। मोक्ष के मार्ग से दूर होने वाले जीवन को आधुनिक शिक्षा में तनाव कहते हैं। जब हमारे जीवन में ये तनाव बढ़ते जाते हैं, तो हमारे जीवन का आनंद स्वतः मिटने लगता है। इसी आनंद की प्राप्ति के लिए हमें एक बार फिर अपनी प्रकृति और संस्कृति के योग को देखने की जरूरत है। इस योग को देखकर, समझकर जब हम भारत के पुनर्जनन की रीति-नीति और भू-सांस्कृतिक मानचित्र तैयार करेंगे, तो भारत फिर से अपनी समृद्धि की राह पकड़ लेगा। ये समृद्धि की राह ही सनातन होगी।

अध्यात्म बनाम आधुनिक विज्ञान

भारत जिस अध्यात्म से विज्ञान के रिश्ते को साधता था, वही भारत की प्रकृति और संस्कृति का योग था। प्रकृति व संस्कृति का योग हमें सनातन बनाए रखना चाहता है, लेकिन हमारी भौतिकी, प्रौद्योगिकी और अभियांत्रिकी इस सनातन में विश्वास नहीं रखती। उसका सनातन में कोई विश्वास नहीं है, उसका लक्ष्य तो चीजों को तोड़-मरोड़ कर अन्ततः भौतिक सत्य पर पहुंचना है; जबकि अध्यात्म का लक्ष्य प्रकृति और संस्कृति के योग के सत्य द्वारा मोक्ष तक जाना है। इन दोनों में बड़ा अंतर है और इन दोनों के अंतर की लड़ाई ने भारत को बहुत नुकसान पहुंचाया है। यह भौतिक सुख की लड़ाई हमारे यहां उत्तर पश्चिम के देशों से आई है, जो नियंत्रण, अतिक्रमण, प्रदूषण और शोषण करने वाली जीवन पद्धति का अंग है। हमारे आध्यात्मिक ज्ञान का मूल उद्देश्य पोषण है। वह पोषण अपना, सबका और अपनी प्रकृति और संस्कृति का भी जरूरी है।

पुनर्जीवन का मार्ग प्रकृति-संस्कृति योग की ओर वापसी

एक तरफ अध्यात्म में पोषण है और दूसरी तरफ विज्ञान में शोषण, अतिक्रमण और प्रदूषण हैं। यह शोषण, प्रदूषण, अतिक्रमण करने वाली सोच उत्तर पश्चिम के देशों में है। क्योंकि वहां का जीवन प्रकृति के विरुद्ध लड़ने वाला था, प्रकृति पर नियंत्रण करने वाला था।

अभी विज्ञान में नया शरीर मिलेगा या नहीं मिलेगा, इसकी बात ही नहीं है; जो कुछ है, इसी जीवन में कर लो, बस! यही अन्तिम जीवन है। जबकि प्रकृति संस्कृति योग में हमारा जीवन तो बराबर चलता रहेगा। यह एक चक्र है जीवन का। इसलिए कोई जल्दी नहीं है। जीवन संपोषित करने वाली रीति-नीति और गति बनाए रखना ही हमारी भारतीय जीवन पद्धति थी। अब जीवन पद्धति से यह सब मिटते जा रहे हैं। इसलिए इसको समग्र और समृद्ध बनाने हेतु अपने पुराने जीवन दर्शन को पुनर्जीवित करने की जरूरत है।

(सप्रेस)

रबी फसल - कुसुम लगायें

भूमि का चुनाव एवं तैयारी

अच्छे उत्पादन के लिये कुसुम फसल के लिये मध्यम काली भूमि से लेकर भारी काली भूमि उपयुक्त मानी जाती है। कुसुम की उत्पादन क्षमता का सही लाभ लेने के लिये इसे गहरी काली जमीन में ही बोयें। इस फसल की जड़ें जमीन में गहरी जाती हैं।

जातियों का चुनाव

मध्यप्रदेश में बोने के लिये कई उपयुक्त जातियाँ हैं, जो जवाहर लाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय के कुसुम अनुसंधान केंद्र, कृषि महाविद्यालय, इंदौर से निकाली गई हैं। यह सभी जातियाँ लगभग 135 से 140 दिनों में पकने वाली है। इन्हीं जातियों से परिस्थिति के अनुकूल चयन करें।

एन.ए.आर.आई-6 : पकने की अवधि 117-137, रोयें रहित किस्म तेल अधिक होता है।

जे.एस.एफ - 1 : यह जाति सफेद रंग के फूल वाली है। इसके पौधे काँटेदार होते हैं। इसका दाना बड़ा एवं सफेद रंग का होता है। इस जाति के दानों में 30 प्रतिशत तेल होता है।

जे.एस.आई. -7 : इस जाति की विशेषता यह है कि यह काँटें रहित है। इसके खिले हुये फूल पीले रंग के होते हैं, और जब सूखने लगते हैं, तो फूलों का रंग नारंगी लाल हो जाता है। इसका दाना छोटा सफेद रंग का होता है। दानों में 32 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है।

जे.एस.आई -73 : यह जाति भी बिना काँटें वाली है। इसके भी खिले हुये फूल पीले रंग के रहते हैं और सूखने पर फूलों का रंग नारंगी लाल हो जाता है। इसका दाना जे.एस.आई -7 जाति से थोड़ा बड़ा सफेद रंग का होता है। इसके दानों में तेल की मात्रा 31 प्रतिशत होती है।

फसल चक्र

इस फसल को सूखा वाले क्षेत्र या बारानी खेती में खरीफ मौसम में किन्हीं कारणों से फसलों के खराब होने के बाद आकस्मिक दशा में या खाली खेतों में नमीं का संचय कर सरलता से उगाया जा सकता है।

खरीफ की दलहनी फसलों के बाद द्वितीय फसल के रुप में जैसे सोयाबीन, मूँग, उड़द या मँगफली के बाद रबी में द्वितीय फसल के रुप में कुसुम को उगाया जा सकता है। खरीफ में मक्का या ज्वार फसल ली हो तो रबी मौसम में कुसुम फसल को सफलता से उगाया जा सकता है।

बीजोपचार

कुसुम फसल के बीजों को बोनी करने के पूर्व बीजोपचार करना आवश्यक है, जिससे कि फफूंद से लगने वाली बीमारियों न हो। बीजों का उपचार करने हेतु 3 ग्राम थायरम या ब्रासीकाल फफूँदनाशक दवा प्रति एक किलोग्राम स्वस्थ बीज के लिये पर्याप्त है।

बोने का समय

मूँग या उड़द यदि खरीफ मौसम में बोई गई हो तो कुसुम फसल बोने का उपयुक्त समय सितम्बर माह के अंतिम से अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह तक है। यदि खरीफ फसल के रुप में सोयबीन बोई है तो कुसुम फसल बोने का उपयुक्त समय अक्टूबर माह के अंत तक है। बारानी खेती है और खरीफ में कोई भी फसल नहीं लगाई हो तो सितम्बर माह के अंत से अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह तक कुसुम फसल सफलतापूर्वक बो सकते हैं।

बोने की विधि

8 किलोग्राम कुसुम का बीज प्रति एकड़ के हिसाब से दुफन या फड़क से बोयें। बोते समय कतार से कतार की दूरी 45 से.मी. या डेढ़ फुट रखना आवश्यक है। पौधे से पौधे की दूरी 20 से.मी. या 9 इंच रखें।

खाद एवं उर्वरक की मात्रा एवं देने की विधि

असिंचित अवस्था में नत्रजन 16 किलोग्राम, स्फुर 16 किलोग्राम एवं 8 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ की दर से दें। सिंचित स्थिति में 24:16:8 किलोग्राम नत्रजन, स्फुर एवं पोटाश प्रति एकड़ पर्याप्त है।

हर तीसरे वर्ष में एक बार 8-10 गाड़ी गोबर की पकी हुई खाद प्रति एकड़ भूमि में मिलाना फायदेमंद रहता है। तिलहनी फसल होने की वजह से गंधक की मात्रा 8-10 किलोग्राम प्रति एकड़ देना उचित रहेगा।

उर्वरक की सम्पूर्ण मात्रा असिंचित अवस्था में बोनी के समय ही भूमि में दें। सिंचित स्थिति में नत्रजन की आधी मात्रा, स्फुर एवं पोटाश की पूरी मात्रा बोनी के समय दें और, शेष नत्रजन की आधी मात्रा प्रथम सिंचाई के समय दें।

सिंचाई

यह एक सूखा सहनशील फसल है अतः यदि फसल का बीज एक बार उग आये तो इसे फसल कटने तक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन जहाँ सिंचाई उपलब्ध हो, वहां, अधिकतम दो सिंचाई कर सकते हैं। प्रथम सिंचाई 50 से 55 दिनों पर (बढ़वार अवस्था) और दूसरी सिंचाई 80 से 85 दिनों पर (शाखायें आने पर) करना उचित होता है।

निंदाई-गुड़ाई

कुसुम फसल में एक बार डोरा अवश्य चलायें तथा एक या दो बार आवश्यकतानुसार हाथ से निंदाई-गुड़ाई करें। निंदाई-गुड़ाई करने से जमीन की ऊपरी सतह की पपड़ी टूट जायेगी। यदि दरारें पड़ रहीं हो तो वह भर जायेंगी और नमी के ह्रास की बचत होगी। निंदाई-गुड़ाई अंकुरण के 15-20 दिनों के बाद करें एवं हाथ से निंदाई करते समय पौधों का विरलन भी हो जायेगा। एक जगह पर एक ही स्वस्थ पौधा रखें।

फसल कटाई

कांटेवाली जाति में काँटों के कारण फसल काटने में थोड़ी कठिनाई जरुर आती है। काँटेवाली फसल में पत्तों पर काँटें होते हैं। तने कांटें रहित होते हैं। बाँये हाथ में दस्ताने पहनकर या हाथ में कपड़ा लपेटकर या तो दो शाखा वाली लकड़ी में पौधों को फंसाकर दराते से आसानी से फसल कटाई कर सकते हैं। काँटे रहित जातियों की कटाई में कोई समस्या नहीं है। बहुत अधिक में कुसुम फसल का रकबा हो तो कम्बाइन हार्वेस्टर से भी कटाई कर सकते हैं।

उपज

जेएसएफ - 1 जाति की पैदावार 680 किलोग्राम प्रति एकड़ प्राप्त होती है

जेएसएफ - 7 जाति की पैदावार 520 किलोग्राम प्रति एकड़ प्राप्त होती है

जेएसएफ - 73 जाति की पैदावार 580 किलोग्राम प्रति एकड़ प्राप्त होती है।

कुसुम

क्र.	किस्म	अधिसूचित वर्ष	उपज (किलो/हेक्टे.)	तेल %	परिपक्वता (दिन)	50% फूल (दिन)
1.	एनएआरआई- 57	2015	1500	29-30	118-151	75
2.	एनएआरआई- 96	2018	2023 (सिंचित)	33.21	135-140	95
3.	आईएसएफ-1	2019	1236 (बारानी) 1864 (सिंचित)	30.5	125-130	85-90
4.	आईएसएफ-764	2018	1583 (बारानी) 2274 (सिंचित)	30.6	125-130	80-85
5.	सीजी कुसुम-1	2020	1677	32-33	120-125	80-85
6.	आईजीकेवी कुसुम (आरएसएस 2016-03)	2021	2710	34.26	138-140	100
7.	राज विजय सैफ्लावर14-1	2021	2000	29-30	121-137	82-87
8.	राज विजय सैफ्लावर18-1	2019	1746	39.1	127-131	77-85
9.	फुले किरण (एसएसएफ 16-02)	2020	2058	30.55	132	85

पौध संरक्षण

कीट

माहो : कुसुम फसल में सबसे ज्यादा माहो की समस्या रहती है। यह प्रथम किनारे के पौधों पर दिखता है। यह पत्तियों तथा मुलायम तनों का रस चूसकर नुकसान पहुँचाता है। माहो द्वारा पौधों को नुकसान न हो, इसलिये मिथाइल डेमेटान 25 ई.सी. का 0.05 प्रतिशत या डाईमिथियेट 30 ई.सी. का 0.03 प्रतिशत या ट्राइजोफॉस 40 ई.सी. का 0.04 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर 15 दिन बाद दुबारा छिड़काव करें।

फल छेदक इल्ली : पौधों में जब फूल आना शुरु होते हैं तब इसका प्रकोप देखा जाता है। इसकी इल्लियाँ कलियों के अंदर रहकर फूल के प्रमुख भागों को नष्ट कर देती है। इसकी रोकथाम के लिये क्लोरोपायरीफास 20 ई.सी. का 0.04 प्रतिशत या डेल्टामेथ्रिन का 0.01 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव करें।

रोग

कुसुम फसल में रोगों की कोई विशेष समस्या नहीं है। रोग या बीमारियाँ हमेशा वर्षा के बाद अधिक आर्द्रता की वजह से खेत में फैली गंदगी से, एक ही स्थान पर बार-बार कुसुम की फसल लेने से होती है। अतः उचित फसल चक्र अपनाना, बीज उपचारित कर बोना व खेत में स्वच्छता रखकर, जल निकास का अच्छा प्रबंध करने से बीमारियाँ नहीं आयेगी।

जड़-सड़न रोग : जब कुसुम फसल के पौधे छोटे होते हैं तब सड़न बीमारी देखने को मिलती है। पौधों की जड़े सड़ जाने से जड़ों पर सफेद रंग का फफूंद जम जाता है। पौधों की जड़ें सड़ जाने के कारण पौधे सूख जाते हैं। इस रोग की रोकथाम के लिये बीजोपचार आवश्यक है। बीजोपचार करके ही बोनी करें।

भभूतिया रोग : इस बीमारी में पत्तों एवं तनों पर सफेद रंग का पावडर जैसा पदार्थ जमा हो जाता है। खेतों में इस प्रकार के पौधे दिखने पर घुलनशील गंधक 3 ग्राम प्रति लीटर लेकर छिड़काव करें या फिर गंधक चूर्ण 7-8 किलो प्रति एकड़ के हिसाब से भुरकाव करें।

गेरुआ : इस बीमारी का प्रकोप होने पर डायथेन एम 45 नामक दवा, एक लीटर पानी में तीन ग्राम मिलाकर फसल पर छिड़काव करके रोकथाम कर सकते हैं।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

रबी प्याज की उन्नत खेती

● धर्मेन्द्र सिंह यशोना
● मनोज कुमार तरवरिया
● सुभाष मंडलोई

मध्यप्रदेश के मालवा अंचल क्षेत्र में कृषकों के पास पर्याप्त कृषि योग्य भूमि एवं संसाधन हैं। यहां अधिकांश कृषक सीमांत कृषक की श्रेणी में आते हैं अर्धशुष्क जलवायु के साथ मध्यम काली मृदा और सिंचाई का पानी रबी मौसम की खेती करने के लिए कुछ क्षेत्रों को छोड़कर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। इस क्षेत्र में किसानों के पास रबी में प्याज उत्पादन के लिए पर्याप्त मात्रा में संसाधन एवं तकनीक उपलब्ध है। इससे किसान को अच्छी कीमत पर बिकने वाली प्याज उत्पादन बहुत ज्यादा होती है। रबी में प्याज की फसल सोयाबीन की फसल कटाई के बाद ली जाती है और सोयाबीन फसल के द्वारा मृदा से सल्फर की अधिक मात्रा का दोहन करने के कारण प्याज के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है क्योंकि प्याज की फसल को भी सल्फर तत्व की अधिक मात्रा की आवश्यकता है। प्याज में सल्फर की वजह से उसकी गुणवत्ता युक्त कंद का उत्पादन होता है तथा प्याज की भंडारण क्षमता भी बढ़ जाती है। किसान को प्याज की नई व अच्छी प्रजातियों के बारे में जानकारी न होने की वजह से अच्छी गुणवत्तायुक्त उत्पादन नहीं ले पाते हैं। लेकिन अब खेती की नई जानकारी एवं तकनीक का उपयोग कर प्याज का अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

रबी प्याज उत्पादन की तकनीकी

प्याज की फ़सल पर तापमान, मृदा का प्रकार, खेत ढ़लान, रोपण का समय, बीज की गुणवत्ता इत्यादि कारकों का प्रभाव प्याज की अच्छी पैदावार एवं गुणवत्ता पर सबसे अधिक पड़ता है। प्याज पौधों की सर्वोत्तम वृद्धि के लिए तापमान 20-25 सेल्सियस तथा हवा में आर्द्रता 70 प्रतिशत तक कंद के विकास हेतु अनुकूल वातावरण माना जाता है। प्याज की अच्छी बढ़वार के लिए वातावरण का तापमान 25 सेल्सियस कम एवं कंद बनने व बड़े आकार लेने के समय इससे अधिक तापमान प्याज के उत्पादन के लिए उपयुक्त होता है। वानस्पतिक वृद्धि के समय उच्च तापमान एवं वर्षा के कारण वातावरण में अधिक आर्द्रता होने से बैंगनी धब्बा एवं झुलसा रोग का प्रकोप बढ़ जाता हैं जिससे कंद अच्छे नहीं बनते जिसका सीधा प्रभाव कंद के विकास व उत्पादन पर होता है, कंद के विकास के समय अधिक दिनों तक तापमान गिरावट होने से फूल के डंठल निकलने लगते हैं। वहीं अचानक तापमान बढ़ने से गांठें पूरी तरह विकसित हुए बिना परिपक्व हो जाती हैं। इसलिए रबी मौसम में प्याज की रोपाई मध्य दिसंबर से जनवरी प्रथम सप्ताह तक कर देने से प्याज की अच्छी बढ़वार व उत्पादन के लिए जनवरी से मार्च तक का वातावरण उपयुक्त होता है

प्याज की किस्म का चुनाव

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की बागवानी अनुसंधान संस्थाओं, राष्ट्रीय बीज निगम एवं कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई प्याज की उन्नत प्रजाति का उपयोग कर अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। जो कि किसान को भी आर्थिक रूप से लाभकारी होती हैं। अधिक उत्पादन देने वाली प्याज की प्रजातियां जैसे पूसा रत्नार, पूसा माधवी, एग्रीफाउंड डार्क रेड, लाईन-883, भीमा डार्क रेड, भीमा किरण, भीमा शक्ती, भीमा श्वेता, भीमा सुपर, भीमा रेड, भीमा राज, फुले स्वर्णा, फुले सामर्थ्य, अर्का कल्याण, एन-53 इत्यादि को अपने प्रक्षेत्र पर लगाकर अच्छा उत्पादन ले सकते हैं।

बुआई का समय तथा बीज की मात्रा

रबी मौसम में प्याज उत्पादन के लिए बीज की बुआई अक्टूबर माह में मानसून समाप्ति के बाद कर 45-60 दिन कि पौध का रोपण नवंबर-दिसंबर में तथा खुदाई मार्च-अप्रैल तक करते हैं। खरीफ (स्थानीय भाषा में नाशिक प्याज) के लिए बुआई अगस्त-सितंबर में, पौध रोपण सितंबर-अक्टूबर में तथा खुदाई जनवरी-फरवरी तक करते हैं। 8-10 कि.ग्रा. बीज एक हेक्टर खेत के लिए पर्याप्त होता है।

मृदा एवं खेत की तैयारी

प्याज उत्पादन के लिए बलुई दोमट मृदा उपयुक्त होती हैं लेकिन मध्यम काली मृदा में भी प्याज की खेती आसानी से की जा सकती है। मृदा का पीएच मान 6.5-7.5 के बीच एवं मध्यम कार्बनिक पदार्थ युक्त सर्वोत्तम मानी जाती हैं। वैसे प्याज की फसल को सभी प्रकार की मृदा में उगा सकते हैं। प्याज की अच्छी फसल के लिए मृदा में उपलब्ध पोषक तत्व नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम, सल्फर, सूक्ष्म पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में होना बहुत आवश्यक है। भूमि को सुविधानुसार 2-3 बार हल से जुताई करके भुरभुरी बनाएं। यदि खेत में अधिक बड़े ढेले हो तो ट्रैक्टर द्वारा रोटोवेटर चलाकर भुरभुरा एवं समतल कर लें तथा 1.5-2.0 मीटर चौड़ाई एवं आवश्यकता अनुसार लम्बाई में छोटी-छोटी क्यारियाँ तैयार करते हैं, क्यारी की चौड़ाई ऐसी हो, जिससे मेड़ों पर बैठकर निराई, गुड़ाई एवं अन्य कृषि क्रियायें की जा सकें। और नाली के द्वारा सिंचाई करें। मेड़ वाली क्यारियों की अपेक्षा ऊंची उठी क्यारियों में कंद की आकार व गुणवत्ता अच्छी होने के कारण प्याज उत्पादन अच्छी होती है।

पौध तैयार करना

प्याज के बीज बहुत छोटे आकार के होने के कारण इनकी बुवाई मिट्टी की सतह पर छिड़काव विधि द्वारा की जाती है जिस खेत में नर्सरी की बुआई करनी हो बुवाई से 15-20 दिनों पहले सिंचाई करके काली पॉलीथिन बिछा दें, जिससे खेत के हानिकारक कीट एवं रोगाणु एवं खरपतवार के बीज सौरीकरण क्रिया से नष्ट हो जाये। इसके पश्चात खेत जुताई ट्रैक्टर या बैल चलित बक्खर से 5-7 सेमी. गहराई तक करें जिससे मिट्टी कि सतह भुरभुरी हो जाए इससे अधिक गहरी जुताई करने पर काली मृदा में पौध की जड़ें अधिक गहरी चली जाती हैं और निकालते समय प्याज की पौध जड़ के पास से अधिक टूटती है या प्याज के बीज की बुवाई 15-20 सेमी. ऊंची उठी हुई क्यारियों बनाकर नर्सरी तैयार करें इन क्यारियों के मध्य में गहरी एवं चौड़ी नाली बनाएं, जिनसे आसानी से सिंचाई व कृषि क्रियायें की जा सकें। बुआई के पहले बीज को आर्द्र गलन जैसे रोग से बचाव के लिए फफूंदनाशक दवा से उपचारित कर बुआई करें। बुआई के बाद बीज को बारीक छनी हुई मिट्टी या गोबर की खाद या कम्पोस्ट से ढक देने के बाद फव्वारे से सिंचाई करें या क्यारियों के मध्य में बनाई गहरी नाली से पानी धीमी गति की दर से मिट्टी गीली होने तक दें।

सिंचाई एवं खरपतवार प्रबंधन

प्याज एक उथली एवं सूक्ष्म जड़ वाली फसल है। इसकी जड़ें जमीन की सतह से अधिकतम 15 सेमी. तक सीमित होती हैं रबी की प्याज फसल में एक सिंचाई रोपाई के तुरंत बाद करते हैं। इसके बाद 15-20 दिन के अंतराल पर कंद बनने तक 5-6 सिंचाई की आवश्यकता होती है। सूक्ष्म टपक सिंचाई तकनीकी द्वारा प्याज की सिंचाई करना सतह सिंचाई कि अपेक्षा अधिक लाभदायक पाया गया है। इससे उत्पादन और गुणवत्ता के साथ ही पानी की बचत और प्याज अधिक उत्पादन होती हैं इस विधि से पानी की कमी होने पर फसल की सिंचाई की पूर्ति पैदावार को बिना प्रभावित किए की जा सकती है। प्याज में खरपतवार जैसे-मोथा, दूब, बथुआ, दुधी, चौलाई इत्यादि खेत में उगते हैं। इनका नियंत्रण फसल बढ़वार के पहले करना आवश्यक है नहीं तो मजदूर के द्वारा इनका नियंत्रण अधिक खर्चीला हो जाता है। खरपतवार फसल को अधिक नुकसान पहुचाते हैं। खरपतवारनाशी का उपयोग जैसे ऑक्सीफ्लोरोफेन का 10-15 मिली. या क्यूजालोफाप इथाइल 25 मिली. प्रति 15 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़काव करने से खरपतवार को नियंत्रित किया जा सकता है।

पोषक तत्व प्रबंधन

फसल की अच्छी बढ़वार एवं उत्पादन के लिए 20-25 टन/हेक्टर गोबर की खाद क्यारियों तैयार करने के पूर्व समान रूप के खेत में मिला दें या गोबर की खाद उपलब्ध ना होने की स्थिति में 3 टन वर्मीकम्पोस्ट की खाद का उपयोग करें। प्याज की फसल को 100 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फास्फोरस, 50 कि.ग्रा. पोटाश तथा 30 कि.ग्रा. सल्फर देने की सिफारिश की जाती है। फास्फोरस, पोटाश और सल्फर की पूरी एवं नाइट्रोजन की 25 कि.ग्रा. मात्रा को पौध रोपाई के पहले मिट्टी में मिला दें। और शेष बची नाइट्रोजन को तीन समान भागों में विभाजित करके पौध रोपण के 30, 45 और 60 दिनों के बाद खड़ी फसल एक समान छिड़क देते हैं। यदि प्याज की फसल बालुई मिट्टी में लगाई गई हो तो इसमें नाइट्रोजन व अन्य पोषक तत्वों की हानी जल अंतःस्त्राव के कारण अधिक होती हैं ऐसी स्थिति में पौध रोपण के 15, 30, और 45 दिनों के बाद जल घुलनशील उर्वरक एनपीके (19:19:19) को 150-200 ग्राम प्रति पम्प (15 लीटर जल) और एनपीके (13:0:46) को भी 150-200 ग्राम प्रति पम्प 60, 75 और 90 दिनों के बाद एवं जल घुलनशील पोटेशियम सल्फेट (0:0:50:17.5) का 45, 60, और 75 दिनों के बाद पर्णीय छिड़काव करने से उपज में बढ़ोतरी के साथ लम्बी अवधि के भंडारण के लिए गुणवत्तायुक्त कंद की प्राप्ति होती है।

कंदों की खुदाई एवं भंडारण

रबी मौसम में प्याज के कंदों की खुदाई मध्य मार्च तक उस समय करते हैं, जब पत्तियों का रंग थोड़ा पीला होने लगता है, तथा मिट्टी कि ऊपरी सतह तोड़कर कंद ऊपर निकलने लगती हैं। कंद का ऊपरी भाग डंठल या पत्तियों के नीचे का तना हाथ से दबाने पर सख्त न होकर मुलायम हो जाता है और कंद का ऊपरी हिस्सा पत्तियों सहित गिरने लगता हैं, इसी समय कंदों की खुदाई करना उपयुक्त होता हैं। प्याज के कंदों का भंडारण वैज्ञानीक तरीके से 0-3 सेल्सियस तापमान तथा 90 प्रतिशत आर्द्रता पर कोल्ड स्टोरेज में करते हैं लेकिन किसान के लिए यह खर्चीला होने के कारण किसान स्वयं सुविधाअनुसार हवादार शुष्क स्थान पर मोटे तार की जाली में प्याज कंद का भंडारण 8-10 माह के लिए आसानी से कर सकते हैं। तार की जाली की संरचना इस प्रकार तैयार करें कि जिसे ईंट या लकड़ी के चौकोर टुकड़ों पर रखा जा सके जिससे प्याज के कंदों के चारों तरफ से हवा का आवागमन हो सके, प्रायोगिक तौर पर यह देखा गया कि प्याज के कंदों की ग्रेडिंग करके भंडारण से कंद में सड़न-गलन की समस्या 90 प्रतिशत तक कम हो जाती है क्योंकि एक समान आकार के कंद में हवा का संचालन, विभिन्न आकार के कंद की अपेक्षा अधिक होता है।

पौध की रोपाई एवं दूरी

रबी की प्याज फसल की पौध की रोपाई अधिकतर मेड़ बनाकर समतल क्यारियों में की जाती है, लेकिन मध्य में नाली बनाकर ऊंची उठी क्यारियों पर करने से अच्छा परिणाम मिलता है। पौध के रोपण से पूर्व पौध की जड़ों को कार्बेन्डजिम 0.10 प्रतिशत के घोल में 10-15 मिनट डुबोकर रोपाई करने से सड़न एवं चने की कटुआ इल्ली से सुरक्षा और पौध को ज्यादा से ज्यादा स्थापित होने में सहायता मिलती है। प्याज रोपाई के लिए सामान्यतः 10-15 सेमी. पौध से पौध की दूरी रखी जाती हैं।

रबी मौसम की चारा फसल बरसीम

● डॉ. मोनिका ज्योति कुजूर
● डॉ. श्री कृष्ण बिलैया

बरसीम

बरसीम पशुओं को पौष्टिक आहार प्रदान करने वाली महत्वपूर्ण हरा चारा वाली फसल है। इसकी खेती रबी ऋतु में पूर्ण सिंचित अवस्था में की जाती है इसके पौधे की बढ़वार काफी तेज होती है। दलहनी फसल होने के कारण इसकी खेती करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है। बरसीम को खिलाने से पशुओं के दूध उत्पादन में बढ़ोतरी होती है। अधिक उत्पादन होने पर हरा चारा को 'हे' अथवा साइलेज बनाते है, जो चारे की कमी होने के समय उत्तम पशु आहार होता है।

भूमि का चुनाव

● दोमट मिट्टी और जिन मिट्टियों में जल धारण क्षमता अच्छी होती है। बरसीम सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है। सर्वोत्तम है हल्की भूमि में इस फसल को अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है।

खेत की तैयारी

● एक या दो बार जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा बना लें और पाटा लगाकर भूमि को समतल करें।

● एक हेक्टेयर खेत में लगभग 20 क्यारियां बनाने से सिंचाई में सुविधा होती है।

खाद और उर्वरक

● गोबर की खाद अथवा कंपोस्ट 10 टन।

● 20 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस और 20 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टर की दर से बोने से पूर्व खेत में बिखेर कर अच्छी तरह से मिट्टी में मिला दें।

● बुवाई के 15-20 दिन बाद यदि पौधे पीले व कमजोर दिखें तो खड़ी फसल में 10-12 किलो यूरिया का छिड़काव प्रति हेक्टेयर की दर से करें।

बीज दर एवं बीज उपचार

● 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज का उपयोग करें।

● कासनी (चिकोरी) की समस्या से निजात पाने के लिए बीज को 5 प्रतिशत नमक के घोल वाले पानी में डुबायें। कासनी का बीज हल्का होने के कारण पानी की सतह पर आ जाता है, इसे निकाल कर नष्ट कर दें। फिर बरसीम के बीज को नमक के घोल वाले पानी से निकाल कर 2-3 बार शुद्ध पानी से धोयें।

● एक किलो बीज में एक ग्राम कार्बेंडाजिम तथा 2 ग्राम थायरम से बीज उपचार करें, इससे मृदा में उपस्थित फफूंदी जनक रोग नहीं आएगी और अच्छा अंकुरण होगा।

● इसके बाद 5 ग्राम राइजोबियम कल्चर प्रति किलोग्राम की दर से बीज उपचार करें।

बोने का समय व तरीका

● बरसीम फसल की बोनी मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर में करना सबसे उचित है।

● पहली विधि में सुविधाजनक आकार की क्यारियां बनाएं (जो पानी को रोक सकें), सिंचाई करें और खड़े पानी में बीज छिड़काव करें। ध्यान रखें कि खेत में पानी की सतह 5 सेंमी से अधिक न रहे।

● दूसरी विधि में बीज को खेत में छिड़ककर बोनी करें फिर सिंचाई करें। ध्यान रखें की सिंचाई का पानी तेज गति से ना बहे नहीं तो बीज पानी के बहाव की दिशा में इकट्ठा हो जाएगा।

सिंचाई

● पहली सिंचाई बोनी के 5 से 6 दिन बाद करें, इसके बाद आवश्यकतानुसार 15 से 20 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

● मार्च में सिंचाई 8-10 दिन के अंतराल पर करें।

● कटाई के बाद सिंचाई आवश्यक रूप से करें।

● कुल 13 से 15 सिंचाई की आवश्यकता होती है।

कटाई प्रबंधन

● बरसीम हरे चारे की बहू कटाई वाली फसल है। पहली कटाई बुवाई के 50 से 55 दिन पर करें। तत्पश्चात 25 से 30 दिन के अंतर पर कटाई करें।

● पौधों 8-10 सेंमी ऊंचाई पर काटें।

उपज

मध्य अक्टूबर में बोई गयी फसल से 5-6 कटाई में लगभग 900 से 1000 क्विंटल हरा चारा प्रति हेक्टेयर प्राप्त किया जा सकता है। बुआई में विलंब होने से उपज में कमी आती है। पहली कटाई में समय अधिक लगता है, और हरे चारे का उत्पादन भी कम प्राप्त होता है। अतः चारे का उत्पादन बढ़ाने के लिए बोनी करते समय बरसीम के बीज में 2 किलोग्राम सरसों या 10 किलोग्राम जई का बीज प्रति हेक्टेयर मिलाकर बोने से पहले कटाई के चारा उत्पादन में वृद्धि होती है, क्योंकि बरसीम के साथ सरसों या जई चारा, अतिरिक्त प्राप्त होता है। तथा बाद में बरसीम के उत्पादन में कोई विपरीत असर नहीं पड़ता है।

बीज उत्पादन

बरसीम का बीज तैयार करने के लिए हरा चारा की कटाई मार्च प्रथम सप्ताह तक ही करें इसके बाद फसल को बीज उत्पादन के लिए छोड़ दें इस प्रकार 3-4 कटाई द्वारा 400-500 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हरा चारा प्राप्त होता है। साथ-साथ 4 से 5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर बीज का उत्पादन प्राप्त हो जाता है।

दुधारू पशु को उसके शरीर के भार का 2.5 से 3.5 प्रतिशत भोजन की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में, एक भैंस को 30 किलोग्राम और गाय को 25 किलोग्राम प्रतिदिन भोजन की आवश्यकता होती है, जिसमें दाना राशन या कंसंट्रेट भी शामिल है। इसमें 60 प्रतिशत गीला और 40 प्रतिशत सूखा चारा हो। कुल हरे-गीले चारे में से 25 प्रतिशत दलहनी प्रजातियों से और 75 प्रतिशत घास से हो। हरा चारा अधिक होने पर भी सूखा चारा जरूरी है। केवल हरा चारा खिलाने से पशु की वृद्धि और दूध की उपज और गुणवत्ता प्रभावित होती है। दलहनी फसलों में 15 से 21 प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है जिसके खिलाने से पशुओं के दूध उत्पादन में बढ़ोतरी होती है।

उन्नत प्रजातियां

जवाहर बरसीम 1: यह जाति संपूर्ण भारतवर्ष में प्रचलित है। इसकी पहली कटाई 55-60 दिन में बाद की कटाई 22-25 दिन के अंतर में की जाती है इसकी बीज उत्पादन क्षमता 3.5 से 4 क्विंटल /हेक्टेयर है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 17-19 प्रतिशत है।

जवाहर बरसीम 5: इस जाति में अधिक शाखाएं व पत्तियां होती है। इसकी पहली कटाई 55-60 दिन की में तथा दूसरी कटाई 22-25 दिन के अंदर में की जाती है। यह प्रजाति जड़ गलन रोग के लिए प्रतिरोधी है। इसकी बीज उत्पादन क्षमता 4 से 5 क्विंटल/हेक्टेयर है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 18 से 30 प्रतिशत है।

जवाहर बरसीम 05-9: यह बरसीम की नई किस्म है। औसत हरे चारे की उपज 750 क्विंटल से 950 क्विंटल /हेक्टेयर और सूखे चारे की उपज 99.83 क्विंटल/हेक्टेयर है। इसकी बीज उत्पादन क्षमता 4.34 क्विंटल/हेक्टेयर है। यह किस्म पत्ती अंगमारी और माहू के लिए प्रतिरोधी है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 17-18 प्रतिशत है।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

समस्या -समाधान

समस्या– रबी या खरीफ की फसल बोआई करते हैं पर जमीन में उकटा लग जाता है उचित सलाह बतलायें।

– शोभित सिंह मार्को

समाधान – फसलों का उकटा रोग बहुत सामान्य रूप से सभी फसलों पर आक्रमण करके नुकसान पहुंचाता है। वास्तव में इसकी फफूंदी जमीन में रहती है साल दर साल बढ़ती जाती है। चना, गेहूं, मटर, मसूर, सोयाबीन सभी में इसका आक्रमण होता है। इससे बचाव के लिये निम्न उपाय करें–

- फसलों का हेरफेर एक क्षेत्र विशेष में, बार–बार एक ही फसल नहीं लें।
- बीज को बुआई पूर्व फफूंदनाशी दवा से उपचारित करें। सामान्यत: थाईरम दो से तीन ग्राम अथवा ट्राईकोडरमा 5 ग्राम/किलो बीज के हिसाब से बीज को उपचारित करें।
- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई तीन साल में एक बार अवश्य करें।
- मेढ़ों की सफाई करें
- बीज की साफ–सफाई करें।

समस्या– गेहूं की अधिक से अधिक उपज के लिये आधुनिक तरीका बतलायें।

– कमलेश शर्मा

समाधान – आपका प्रश्न सामयिक है आपने गेहूं की अधिक उपज के नुस्खे जानना चाहते हैं तो लीजिए जानिये इन नुस्खों को और अपनाये भी।

- गेहूं हो या कोई अन्य जिन्स विकसित जातियों के उपयोग से उत्पादन की प्रथम सीढ़ी आसान हो जाती है। उन्नत किस्में जैसे एचआई 1605, जेडब्ल्यू 3020, 3173, 3211, एचआई 8823, जेडब्ल्यू 3269, एमपी 3288, डीबीडब्ल्यू 119, एचआई 1655 (चिन्हित) ही लगायें.
- बीज का उपचार थाईरम अथवा वीटावेक्स से अवश्य करें ताकि अच्छा अंकुरण प्राप्त हो सके।
- भूमि की तैयारी बहुत अच्छी तरह से की जानी चाहिए। बीज अधिक गहराई पर ना बोया जाये तथा 100 किलो/हे. से अधिक ना डाला जाये।
- सिफारिश के अनुरूप उर्वरक डालें तथा संतुलित उर्वरक उपयोग करें साथ ही उर्वरक की स्थापना बीज के नीचे की जाये, व खाद, बीज का मिश्रण कदापि न करें।
- क्रांतिक अवस्था पर सिंचाई तथा वाडर स्ट्रिप का उपयोग हो ताकि जल एवं समय दोनों की बचत हो सके।
- मंडुसी खरपतवार (Phalaris minor) से उपज में 25–30 प्रतिशत की कमी आ सकती है। मंडुसी के लिए क्लोडिनाफॉप प्रोपरगिल 9% + मेट्रिब्यूज़िन 20% WP (w/w) (Clodinafop propargyl 9% + Metribuzin 20% WP (w/w) या सल्फोसल्फ्यूरॉन 75% WG (Sulfosulfuron 75% WG) का प्रयोग करें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

समस्या – मैं सिंचित चना लगाना चाहता हूं तकनीकी बतलायें।

– सुन्दरलाल पटेल

समाधान – आप चने की सिंचित खेती करना चाहते हैं कृपया निम्न बिंदुओं पर ध्यान दें।

- जातियों में जे.ज़ी.–1, 16, 74, 130, 218, 412, 322, जाकी–9218, जवाहर चना काबुली–1, जवाहर चना काबुली–3, काक–2, आई.सी.सी.व्ही.–2, विजय, विशाल, जे.ज़ी.–63, जे.ज़ी.–226,जे.ज़ी.–36 इत्यादि।
- चने में वायुमंडल से नत्रजन इकट्ठा करने की प्राकृतिक शक्ति है फिर भी प्रारंभिक अवस्था के लिये 43 किलो यूरिया, 250 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 20 किलो गंधक डालने से अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।
- उर्वरक की स्थापना सदैव बीज के नीचे की जाये।
- यदि शीतकालीन वर्षा ना हो पाई हो तो बुआई के 45 दिनों बाद एक सिंचाई अवश्य करें।
- खेत से सोयाबीन के स्वयं ऊगे पौधों को निकाल कर नष्ट करें।
- पक्षियों के बैठने के लिये 'टी' आकार की खूटियां जगह–जगह अवश्य लगायें।
- फेरोमेन ट्रेप लगाकर कीट नियंत्रण करें।
- खरपतवार नियंत्रण के लिये स्टाम्प की 4.5 लीटर मात्रा 600 लीटर पानी में घोल बनाकर बुआई के तुरंत बाद एक छिड़काव अवश्य करें।

समस्या– मैं फ्रेंचबीन लगाना चाहता हूं कृपया तकनीकी बतलायें।

– सुधीर शर्मा

समाधान– फ्रेन्चबीन जिसे राजमा भी कहते हैं खरीफ के अलावा रबी में भी लगाया जा सकता है आपका परिचय उत्पादन के प्रमुख बिंदुओं से –

- जातियों में अर्का कोमल, पंत अनुपमा,पंतबीन 2 आदि किस्में रबी मौसम के लिये उपयुक्त हैं।
- यद्यपि इसकी बुआई अक्टूबर में ही की जानी चाहिए फिर भी आप अभी लगा सकते हैं।
- वास्तव में यह फलीदार फसल है फिर भी इसको नत्रजन की आवश्यकता होती है।
- 260 किलो यूरिया, 375 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 33 किलो पोटाश/हे. डालें।
- पंक्ति से पंक्ति की दूरी 35 से 40 से.मी. तथा पौध से पौध 10 से.मी.की दूरी रखें।
- बीज 5–7 से .मी. गहराई पर डालें।
- फली 50 से 60 दिनों में उपलब्ध हो जाती है।

समस्या– अरहर की फसल में फूल आने लगे हैं कृपया इल्ली की रोकथाम के उपाय बतलायें।

– जयप्रकाश चौरे

समाधान – आपका प्रश्न सामयिक है वर्तमान में अरहर में फूल आने लगे हैं कहीं –कहीं तो इतने पीले फूल दिखते हैं कि पौधा का हरापन दब जाता है। इसके बाद फली बनना शुरू होगा। इस अवस्था में फसल को बरबाद करने के लिये फली छेदक भी तैयारी कर रहा है। कीट की क्रियाशीलता पर सक्रिय पन रखना जरूरी है। अन्यथा 12 महीने की मेहनत से पाली –पोसी फसल खत्म हो जायेगी। रोकथाम के लिये निम्न उपाय करें।

- पॉड बोरर के नियंत्रण के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट 5 प्रतिशत एसजी का प्रयोग करें।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

स्वास्थ्य/शिक्षण

सुबह का नाश्ता दिमाग और शरीर दोनों के लिए फायदेमंद

सुबह का नाश्ता लोगों की सेहत को सबसे ज्यादा फायदेमंद होता है। आमतौर पर लोग जल्दबाजी और हड़बड़ी में सुबह का नाश्ता छोड़कर सीधा दोपहर के भोजन पर टूट पड़ते हैं। यह सेहत को नुकसान पहुंचाता है। विशेषज्ञों के मुताबिक सुबह का नाश्ता अच्छी सेहत के हिसाब से बेहद जरूरी है। पूर्व में हुए शोधों में यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि सुबह का नाश्ता दिमाग और शरीर दोनों के लिए फायदेमंद होता है।

ये हैं ब्रेकफास्ट के फायदे –

- सुबह का नाश्ता शरीर को ऊर्जावान बनाता है। नियमित नाश्ता करने वाले लोगों की पाचन क्षमता ठीक रहती है। ये लोग नाश्ता नहीं करने वाले लोगों की अपेक्षा अपना वजन भी जल्द घटा लेते हैं।
- सुबह नाश्ता करने वाले लोग अधिक प्रभावी और सजग तरीके से अपने काम को अंजाम देते हैं। इससे दिन की अच्छी शुरुआत होती है और उनके मस्तिष्क को पर्याप्त ऊर्जा मिलती है।
- सर्वे में यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि जो बच्चे सुबह अच्छा नाश्ता करते हैं, स्कूल में उनका प्रदर्शन बेहतर होता है।
- अच्छे ब्रेकफास्ट में जूस शामिल होता है। लेकिन जूस के बजाय फल सेहत के लिए ज्यादा फायदेमंद होता है।

- नाश्ते में फल को शामिल करें। विटामिन, खनिज और फाइबर होने के कारण यह संतुलित आहार माना जाता है।
- ब्रेकफास्ट को जल्दी – जल्दी में निपटाएं नहीं। इसमें पौष्टिक चीजों को भी शामिल करें। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित आहार बेहद जरूरी है।
- ब्रेकफास्ट में फास्टफूड को शामिल मत करें। दिन की शुरुआत ऐसे खाने से न करें जो सस्ता, जल्द बनने वाला और सुविधाजनक हो।
- फलों का जूस पीते समय उससे मिलने वाली कैलोरी का भी ध्यान रखें। एक गिलास जूस में लगभग 80–100 कैलोरी होती है। जूस को पीने से पहले एक गिलास पानी पिएं। इससे आप कम जूस पिएंगे। जूस से ब्लड शुगर बढ़ता है।
- अगर आप ब्रेड पर मक्खन के साथ जैम–जैली लगाकर खाने के शौकीन हैं तो वसा युक्त खाने से परहेज करें। इसके बजाए फलों से युक्त कुछ खाएं जो वसा रहित होने के साथ ही पौष्टिक भी हो।
- अंडा खाते हैं तो उसके सफेद हिस्से को ही खाएं। एक पूरा अंडा और दो अंडे की सफेदी से बना आमलेट खा सकते हैं।
- नाश्ते में दलिया को शामिल करें। इसमें प्रचुर मात्रा में फाइबर पाया जाता है। स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होने के साथ ही यह कोलेस्ट्राल को घटाता है।
- नाश्ते में प्रोटीन जरूर शामिल करें। प्रतिदिन नाश्ता करने से मस्तिष्क को ताकत मिलती है।

स्वस्थ सेहत के लिये खानपान में बदलाव

- स्वस्थ सेहत के लिए आपको जल्दी सोने और जल्दी उठने की आदत डालनी चाहिए जिससे आप भरपूर नींद भी ले सकें और सुबह एकदम तरोताजा रहें।
- सुबह उठकर 3–4 गिलास पानी पीने की आदत डालें और इसके अलावा भी आपको दिन भर में कम से कम 10–12 गिलास पानी पीना चाहिए जिससे शरीर के विषैले तत्व बाहर निकल जाएं।
- नित्य कामों से फ्री होकर टहलने जाएं। सदा स्वस्थ रहने के लिये जरूरी है कि आप व्यायाम को नियमित रूप से अपनी जीवनशैली में शामिल करें और रोजाना सैर के अलावा एरोबिक्स, व्यायाम या फिर योगा करें। इससे न सिर्फ आप निरोग रहेंगे बल्कि हरदम एक्टिव रहेंगे।

- आपको स्वस्थ रहने के लिये अपने खान–पान का खास ध्यान देना होगा। जिससे मोटापे की समस्या से भी बचा जा सके।
- खानपान में आपको संतुलित और पौष्टिक आहार शामिल करना होगा, जिसमें कैल्शियम, विटामिन, प्रोटीन और अन्य मिनरल्स शामिल हो।
- फिट रहने के लिये तरल पदार्थों का सेवन भी बहुत जरूरी है।
- स्वस्थ रहने के लिये हरी सब्जियों का सेवन जरूरी हैं।
- मौसमी फल और सेब, केला, अंगूर, पपीता इत्यादि के साथ ही खाने में सलाद को भी शामिल करना चाहिए।
- आप फिट रहना चाहते हैं तो जरूरी है कि आप अपनी नींद पूरी करें। पर्याप्त नींद लेने से आप चिंता, तनाव और अन्य समस्याओं से मुक्त रह सकते हैं।
- स्वस्थ रहने के लिए हंसना बहुत लाभकारी है। ये एक ऐसा व्यायाम है जिससे आप हरदम खुश रह सकते हैं। हंसना हृदय, गला, फेफड़ों व श्वासनली के लिए यह संपूर्ण व्यायाम है। यह इंसान की मानसिक, शारीरिक व भावनात्मक परेशानियों को दूर भगाता है।
- हंसी मनुष्य के काम करने की क्षमता को भी बढ़ाती है।
- अगर सुख की नींद सोना हो तो सोते समय चिंता न करें, प्रभुनाम का चिंतन करें।
- पाचन शक्ति ठीक रखनी हो तो ठीक वक्त पर भोजन करें और प्रत्येक कौर को 32 बार चबाएं।
- अपनी आर्थिक शक्ति से अधिक धन खर्च करने वाला कर्जदार हो जाता है। अपनी शारीरिक शक्ति से अधिक श्रम करने वाला कमजोर हो जाता है।
- भोजन करते समय और सोते समय किसी भी प्रकार की चिंता, क्रोध या शोक नहीं करना चाहिए। भोजन से पहले हाथ और सोने से पहले पैर धोना तथा दोनों वक्त मुंह साफ करना हितकारी होता है।
- यदि आप मुफ्त में स्वस्थ और चुस्त बने रहना चाहते हैं तो आपको तीन काम करना चाहिए। पहला तो प्रातः जल्दी उठकर वायु सेवन के लिए लम्बी सैर के लिये जाना और दूसरा ठीक वक्त पर खूब अच्छी तरह चबा–चबाकर खाना तथा तीसरा दोनों वक्त शौच अवश्य जाना।
- बीमारी की अवस्था में, बीमारी से मुक्त होने के बाद, भोजन करने के बाद, परिश्रम या यात्रा से थके होने पर प्रातःकाल तथा सूर्यास्त के समय और उपवास करते समय विषय भोग करना बहुत हानिकारक होता है।
- यदि आप सुख चाहते हैं तो दुःख देने वाला काम न करें, यदि आप आनंद चाहते हैं तो स्वास्थ्य की रक्षा करें। यदि आप स्वास्थ्य चाहते हैं तो व्यायाम और पथ्य का सेवन करें। संसार के सब सुख स्वस्थ व्यक्ति ही भोग सकता है। कहा भी गया है पहला सुख निरोगी काया।

ठंड में रखे सदाबहार पौष्टिक आहार

सलाद– आपके सुबह व शाम के भोजन में सलाद के लिए एक सुरक्षित स्थान हो। यदि आप कम कैलोरी और हाई फाइबर वाला फूड लेना चाहते हैं तो सलाद आपके लिए बेहतर विकल्प है।

सलाद के लिए प्रयोग में आने वाली कच्ची सब्जियों व फलों में एंटी ऑक्सीडेंट, नेचुरल एंजाइम्स और फाइबर्स होते हैं जो शरीर के कोलेस्ट्रॉल को कम करने के साथ ही भोजन के पाचन में भी सहायक होते हैं।

छिलके वाली दालें – छिलके वाली दालों में प्रोटीन की भरपूर मात्रा होती है। प्रोटीन के साथ ही दालों में फोलिक एसिड, विटामिन ए, विटामिन बी आदि होता है। इनका रोजाना सेवन शरीर में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करता है जिससे आपका वजन नियंत्रित होता है।

तरल, जूस व ड्रिंक – भोजन के पूर्व या पश्चात यदि आप तरल पदार्थ लेने के आदी हैं तो इस सर्द मौसम में भी आप छाछ, लस्सी, दही व फ्रूट जूस का सेवन कर सकते हैं। दही, छाछ व ताजे फलों का रस आपके शरीर के लिए गुणकारी होता है। खट्टे फलों में नींबू का रस वजन कम करने, डेंटल केयर, बुखार, रक्त शुद्धि आदि में सहायक होता है।

अंकुरित अनाज– अंकुरित अनाज में पोषक तत्वों की मात्रा दुगुनी हो जाती है। चना, मूंग, सोयाबीन, मटर आदि को अंकुरित करके खाया जा सकता है। सर्दियों के मौसम में नाश्ते में अंकुरित अनाज को शामिल करना स्वास्थ्य के लिहाज से बेहतर है।

भरपूर अंकुरित अनाज का सेवन आप सूप या सलाद के साथ भी कर सकते हैं। सुलभ, सस्ता, बनाने में आसान व पौष्टिक होने के कारण अंकुरित अनाज का सेवन आपके शरीर के लिए लाभदायक होता है। विटामिन, मिनरल्स, प्रोटीन, एंटी ऑक्सीडेंट आदि की भरपूर मात्रा होने के कारण अंकुरित अनाज हमारे भोजन के पाचन में भी सहायक होता है।

पाक्षिक पंचांग

24 नवम्बर से 7 दिसम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
अगहन शुक्ल 4 से पौष कृष्ण 3 तक

दि.	माह	वार		तिथि	त्यौहार
24	नवम्बर	सोम	अगहन शुक्ल	4	विनायकी चतुर्थी व्रत
25	नवम्बर	मंगल	----------	5	विवाह पंचमी
26	नवम्बर	बुध	----------	6	
27	नवम्बर	गुरु	----------	7	पंचक 10.2 दिन से
28	नवम्बर	शुक्र	----------	8	पंचक
29	नवम्बर	शनि	----------	9	पंचक
30	नवम्बर	रवि	----------	10	पंचक
01	दिसम्बर	सोम	----------	11	पंचक 7.31 रात तक
02	दिसम्बर	मंगल	----------	12	प्रदोष
03	दिसम्बर	बुध	----------	13	
04	दिसम्बर	गुरु	----------	14	पूर्णिमा
05	दिसम्बर	शुक्र	पौष कृष्ण	1	
06	दिसम्बर	शनि	----------	2	
07	दिसम्बर	रवि	----------	3	

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

मत्स्य किसानों को नवीन तकनीक एवं कौशल विकास अपनाने की जरूरत: श्री नेताम

कृषि मंत्री विश्व मात्स्यिकी दिवस पर आयोजित कृषक संगोष्ठी में हुए शामिल

रायपुर। कृषि तथा मछलीपालन मंत्री श्री रामविचार नेताम विश्व मात्स्यिकी दिवस पर इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित कृषि मंडपम सभागार में आयोजित एक दिवसीय मत्स्य कृषक संगोष्ठी में शामिल हुए। उन्होंने संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रति वर्ष 21 नवंबर को विश्व मात्स्किी दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य मत्स्य पालन के महत्व, मछुआ समुदाय के अधिकारों, आर्थिक आजिविका, खाद्य सुरक्षा, सांस्कृतिक विरासत एवं समुदाय सशक्तिकरण हेतु जागरूकता लाना है। श्री नेताम ने कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण कर रजत जयंती मना रहा है। राज्य में प्राकृतिक रूप से मछली पालन के स्त्रोत प्रचूर मात्रा में उपलब्ध है। मत्स्य किसानों के विकास के लिए आवश्यकता है केवल नवीन तकनीक, मानव कौशल विकास, आर्थिक प्रोत्साहन एवं सहायता की।

कृषि मंत्री श्री नेताम ने बताया कि मछली पालन हेतु गुणतत्ता युक्त मत्स्य बीज एक आधारभूत आवश्यकता है। राज्य को मत्स्य बीज के क्षेत्र में अग्रणी बनाने हेतु निरंतर प्रयास जारी है। अब तक कुल 82 नवीन हैचरी निर्मित कर 120 हैचरियों के माध्यम से 583 करोड़ मत्स्य बीज प्रति वर्ष उत्पादित हो रहा है, एवं राज्य देश में 6 वें स्थान पर है। हमारा राज्य मत्स्य बीज उत्पादन में न सिर्फ आत्मनिर्भर हुआ अपितु अन्य राज्यों को निर्यात भी हो रहा है।

रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर एवं जांजगीर में थोक मत्स्य बाजार की स्थापना

मंत्री श्री नेताम ने कहा कि विपणन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने एवं उपभोक्ता तक ताजी मछली पहुंचाने के लिए 1008 मोटर साइकल, आईस बॉक्स, 10 थी व्हीलर एवं 05 इन्सुलेटेड ट्रक, 114 वाहन (लाइव फिश वेडिंग सेन्टर) वितरित किए गए। रायपुर दुर्ग बिलासपुर एवं जांजगीर में थोक मत्स्य बाजार की स्थापना की गई। मंत्री श्री नेताम ने इस मौके पर मछुआ संघ की ओर से हितग्राहियों को लाभांश राशि का चेक प्रदान किया।

COP30 में यूपीएल की लो-मीथेन राइस परियोजना को मिला वैश्विक SBCOP अवॉर्ड

मुंबई (कृषक जगत)। सतत कृषि समाधानों की वैश्विक अग्रणी कंपनी यूपीएल को ब्राज़ील के बेलेम में आयोजित COP30 में फूड सिस्टम्स श्रेणी के तहत प्रतिष्ठित SBCOP अवॉर्ड मिला है। यह सम्मान UPL की लो-मीथेन राइस परियोजना को दिया गया, जिसका उद्देश्य उन्नत किस्मों और आधुनिक कृषि तकनीकों के माध्यम से धान खेती से होने वाले मीथेन उत्सर्जन को कम करना है। यह अवॉर्ड ब्राज़ील की नेशनल कन्फेडरेशन ऑफ इंडस्ट्री (CNI) द्वारा संचालित वैश्विक SBCOP कार्यक्रम का हिस्सा है, जो प्रभावशाली और विस्तार योग्य जलवायु समाधानों को पहचान देता है।

UPL समूह के चेयरमैन और ग्रुप CEO श्री जय श्रॉफ ने कहा, 'यह सम्मान हमारे लिए गर्व की बात है। लो-मीथेन राइस परियोजना किसानों को वैज्ञानिक और टिकाऊ तरीके अपनाने में मदद करती है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है और धान खेती का पर्यावरणीय प्रभाव कम होता है। यह हमारी टिकाऊ और जलवायु-लचीली कृषि प्रणाली की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।'

यह परियोजना UPL की वैश्विक #AFarmerCan पहल से भी जुड़ी है, जो किसानों को बदलती जलवायु चुनौतियों से निपटने के लिए तकनीक, ज्ञान और बेहतर प्रथाएँ प्रदान करती है।

SBCOP के चेयरमैन रिकार्डो मुस्सा ने बताया कि 600 से अधिक संस्थानों और कंपनियों की 1,400 से अधिक परियोजनाओं में से 48 सर्वश्रेष्ठ पहलों का चयन किया गया, और UPL की परियोजना अपनी प्रभाव क्षमता और बड़े स्तर पर लागू किए जाने की योग्यता के कारण इनमें शामिल हुई। यह उपलब्धि सतत कृषि, कम उत्सर्जन और किसानों की दीर्घकालिक समृद्धि के प्रति UPL की प्रतिबद्धता को और मजबूत करती है।

कृषक जगत
जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
उत्तम कुमार देशमुख
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

कृषक जगत
जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
बलभद्र शर्मा
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम ....
....
ग्राम .... पो. ....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....
वि.ख. .... तह. ....
जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....
शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....
ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....
ई-मेल ....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,
Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403, आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

जैन इरिगेशन को निर्यात में प्लेक्स काउंसिल से मिले आठ पुरस्कार

मुंबई/जलगांव (कृषक जगत)। पाइप, ड्रिप सिंचाई आदि के माध्यम से जल संरक्षण के माध्यम से कृषि क्षेत्र में समृद्धि लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली विश्व प्रसिद्ध कंपनी जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि. को प्लास्टिक उत्पादों के विभिन्न समूहों में दो वर्षों 2023-24 और 2024-25 के लिए आठ निर्यात पुरस्कार प्रदान किए गए। यह समारोह भारतीय प्लास्टिक उद्योग में उत्कृष्टता के 70 वर्षों का जश्न मनाते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को सम्मानित करने के लिए आयोजित किया गया था। पीएलएक्स काउंसिल प्लेटिनम जुबली समारोह और निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कार समारोह में वरिष्ठ उद्योगपति श्री एम. पी. तापड़िया, विधानसभा अध्यक्ष श्री राहुल सुरेश नार्वेकर, श्री रवीश कामत, पीएलएक्स काउंसिल के अध्यक्ष श्री विक्रम बधोरिया, उपाध्यक्ष श्री सचिन शाह, श्री हेमंत मेनोचा, श्री श्रीभाष दशमोहपात्रा उपस्थित थे।

मुंबई में हुए इस पुरस्कार समारोह में प्लास्टिक निर्यात संवर्धन परिषद (प्लेक्स काउंसिल) द्वारा दिए गए इस पुरस्कार में जैन इरिगेशन ने हैट्रिक बनाई है। केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल से कंपनी की ओर से उपाध्यक्ष श्री अनिल जैन और वरिष्ठ सहयोगियों डॉ. अनिल पाटिल, वी. एम. भट, डॉ. बालकृष्ण यादव, श्री राजेंद्र महाजन, श्री एस. एन. पाटिल, श्री के. बी. सोनार, सुचिता केरावंत, दीपा शिवड़े के साथ यह पुरस्कार प्राप्त किया।

जैन इरिगेशन कंपनी को वर्ष 2023-24 और 2024-25 के लिए पाइप्स और होसेस (प्लास्टिक) फिटिंग श्रेणी में निर्यात उत्कृष्टता पुरस्कार के लिए चुना गया है। इसमें जैन को 2023-24 के लिए ड्रिप इरिगेशन सेक्शन में निर्यात के लिए प्रथम पुरस्कार, फिटिंग पाइप होसेस सेक्शन में द्वितीय पुरस्कार, पाइप होसेस सेक्शन में प्रथम पुरस्कार और निर्यात के लिए पीवीसी फोम शीट सेक्शन में प्रथम पुरस्कार मिला। जबकि 2024-25 के लिए कंपनी को ड्रिप इरिगेशन में प्रथम पुरस्कार, फिटिंग पाइप और होसेस सेक्शन में द्वितीय पुरस्कार, पाइप होसेस सेक्शन में उत्कृष्ट निर्यात के लिए द्वितीय पुरस्कार और पीवीसी फोम शीट सेक्शन में प्रथम पुरस्कार मिला। इस अवसर पर मुंबई कार्यालय से एकनाथ महाकाल, किसान वेयर, शिवा तुपे ने पुरस्कार समारोह का संचालन किया। श्री विक्रम बधोरिया ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर प्रमुख गणमान्यों सहित राहुल नार्वेकर ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आईपीएल की फसल संगोष्ठी

धमतरी। इंडियन पोटाश लि. द्वारा गत दिनों भानपुरी जिला धमतरी में एक फसल संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में श्री एसके साहू, एसएडीओ, श्रीमती भाग्यश्री गुप्ता ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, गांव के सरपंच श्री ईश्वर लाल साहू एवं आईपीएल कम्पनी के प्रतिनिधि श्री लोकेश जेठवा उपस्थित थे। इस संगोष्ठी में किसानों को धान फसल की आधुनिक खेती और आगामी रबी फसल जैसे कि चना और गेहूं की खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। इस संगोष्ठी में आईपीएल के उत्पाद जैसे - पोटाश, पोलिहलाइट और नैनो DAP एवं नैनो Urea की भी जानकारी किसानों को दी गई।

किसान सम्मान निधि का इफको ने किया व्यापक प्रसारण

रायपुर। प्रधानमंत्री ने गत दिनों तमिलनाडु के कोयम्बटूर से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 21वीं किस्त जारी की। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि 'देश की प्रगति का आधार हमारा किसान है।' उन्होंने बताया कि सरकार लगातार किसानों को नई तकनीक, वैज्ञानिक खेती, आधुनिक कृषि साधन और बेहतर संसाधनों से जोड़ने के लिए काम कर रही है। आने वाले समय में कृषि क्षेत्र को और मजबूत एवं लाभकारी बनाने के लिए कई नई पहलें लागू की जाएँगी। इस महत्वपूर्ण अवसर पर इफको ने पूरे प्रदेश में बड़े स्तर पर यह कार्यक्रम किसानों तक पहुँचाया। इफको ने कृषि विज्ञान केंद्रों, सहकारी समितियों, सभागारों, पंचायत भवनों और गाँवों के प्रमुख स्थानों परटीवीएवं प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का लाइव प्रसारण कराया, जिससे हजारों किसान सीधे प्रधानमंत्री का संदेश देख व सुन सके।

इफको के अधिकारियों ने कार्यक्रम के दौरान किसानों को इफको के विभिन्न उर्वरकों, नैनो तकनीक आधारित उत्पादों तथा आधुनिक खेती से संबंधित सभी जानकारियाँ दीं। विशेष रूप से आगामी रबी सीजन के लिएइफको नैनो डीएपीपर केंद्रित जानकारी दी गई, जिसमें इसके लाभ, उपयोग विधि, मात्रा और खेत में प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया गया।

किसानों की समझ बढ़ाने के लिए नैनो डीएपी से बीज उपचार का लाइव प्रदर्शन भी किया गया। किसानों ने प्रत्यक्ष रूप से देखा कि कम मात्रा में नैनो डीएपी अधिक प्रभाव देता है, लागत कम करता है और उत्पादन बढ़ाने में सहायक है।

किसानों ने इफको की इस पहल की सराहना की और कहा कि ऐसे कार्यक्रम उन्हें समय पर सही जानकारी प्रदान करते हैं तथा प्रधानमंत्री द्वारा बताए गए कृषि सुधारों और आधुनिक तकनीक से सीधे जुड़ने का अवसर देते हैं।

इफको ने इस आयोजन के माध्यम से प्रधानमंत्री का संदेश गाँव-गाँव और किसान-से-किसान तक पहुँचाकर कृषि जागरूकता को एक नई दिशा दी।

चना, मटर-आलू फसल के लिए लाभकारी - बूम फ्लावर

इंदौर (कृषक जगत)। देश की प्रतिष्ठित कम्पनी देवी क्रॉप साइंस प्रा. लि. का उत्पाद बूम फ्लावर रबी फसलों में खासतौर से चना, मटर और आलू की फसल के लिए बहुत लाभकारी है। वस्तुत: बूम फ्लावर एक पादप वृद्धि प्रवर्तक है, जो फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद करता है। बूम फ्लावर के इस्तेमाल से पौध विकास को एक नया आयाम मिलता है और अच्छी उपज प्राप्त होती है।

कंपनी के वाइस प्रेसिडेंट (मार्केटिंग) श्री एस.पी. देशमुख ने देवी क्रॉपसाइंस कम्पनी के प्रमुख उत्पाद बूम फ्लावर की विशेषताओं और इससे होने वाले फायदों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि बूम फ्लावर में नाइट्रोबेंजीन 20 प्रतिशत ई डब्ल्यू होता है। यह पौधों के विकास के साथ ही अति उत्तम फुल उत्तेजक, शक्तिवर्धक और उपजवर्धक उत्पाद है, जो पिछले दो दशकों से देश और विदेश में नंबर एक विश्वसनीय ब्रांड के रूप में स्थापित है।

देवी क्रॉपसाइंस पहली ऐसी एग्रो केमिकल कम्पनी है, जिसके बूम फ्लावर उत्पाद को भारत में पीजीआर के रूप में पंजीकृत किया गया है। कंपनी देश के 18 राज्यों और दुनिया के 22 देशों में इसका विक्रय कर रही है इसके अलावा कंपनी के पास बायो स्टीमुलेंट और बायो फर्टिलाइजर की भी विस्तृत श्रृंखला है।

विशेषताएं - देवी क्रॉपसाइंस का बूम फ्लावर एक पादप वृद्धि प्रवर्तक है जो फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद करता है। यह पौधों के विकास, फूल आने और फल लगने की प्रक्रिया को बेहतर बनाता है। इसके मुख्य उपयोगों में शुरुआती चरणों में जड़ों और शाखाओं का विकास करना और पुष्प चरण में फूलों की संख्या बढ़ाना शामिल है।

चना, आलू और मटर में बूम फ्लावर के लाभ - प्रारंभिक चरण में इसका छिड़काव करने से जड़ों का तेजी से विकास होता है और शाखाओं की संख्या बढ़ती है।यह फूलों की संख्या को बढ़ाता है, जिससे अच्छी उपज मिलती है। यह पौधों द्वारा पोषक तत्वों के अवशोषण में सुधार करता है। यह पौधों को महत्वपूर्ण चरणों में ऊर्जा प्रदान करता है। यह प्रचुर मात्रा में फूल आने को प्रेरित करता है और फूल, कलियों और फलों को समय से पहले गिरने से रोकता है। सही समय पर उपयोग करने से उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि होती है और उपज की गुणवत्ता में सुधार होता है। यह जड़ के विकास को बढ़ावा देता है और पौधों को बेहतर ढंग से मिट्टी में जड़ जमाने में मदद करता है। बूम फ्लावर पोषक तत्वों के अवशोषण और उपयोग दक्षता में सुधार करता है, जिससे पौधा मजबूत बनता है।

उपयोग की विधि - बूम फ्लावर को 2 से 3 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से इस्तेमाल करने की सलाह दी जाती है। छिड़काव की मात्रा फसल के पत्ती क्षेत्र, अवस्था और फसल की प्रकृति पर निर्भर करती है। सर्वोत्तम परिणामों के लिए फसल की सही वृद्धि अवस्था में इसका प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। आमतौर पर, फसल की अवधि के आधार पर मौसमी फसलों पर 3 से 4 छिड़काव की सलाह दी जाती है। **अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें 9826622620**

चम्बल फर्टिलाइजर्स का कृषक प्रशिक्षण

बिलासपुर। चम्बल फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लि. द्वारा कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम, कृषि विज्ञान केन्द्र बिलासपुर में आयोजित किया गया, जिसमें प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम में श्री एस.के. दुबे (सीनियर रीजनल मैनेजर), चम्बल फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लि. रायपुर, कृषि विज्ञान केन्द्र के डॉ. गीत शर्मा, प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. जयंत साहू, पादप रोग विशेषज्ञ डॉ. निवेदिता चौधरी, कीट विशेषज्ञ डॉ. विजय शुक्ला, कृषि वैज्ञानिक उपस्थित थे।

बैठक में सहायक प्रबंधक स्नेहिल चौधरी ने अतिथियों का स्वागत कर कार्यक्रम का उद्देश्य बताया। कंपनी के सीनियर रीजनल मैनेजर श्री दुबे ने कंपनी की विरासत, संगठन के सिद्धांतों और मूल्यों की जानकारी दी। साथ ही उत्पादों की गुणवत्ता और उत्पादन के बारे में बताया।

उन्होंने कहा कि कृषकों को संतुलित मात्रा में कृषि उर्वरकों का उपयोग करने की आवश्यकता पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। मिट्टी जाँच की आवश्यकता एवं महत्व को सुनिश्चित करने की दिशा में कार्य करने की ज़रूरत है। उन्होंने कृषक एप तथा अन्य सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म और हैलो उत्तम की जानकारी दी।